ॐ

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला – द्वादश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एव मूल्याङ्कित शोधपत्रिका

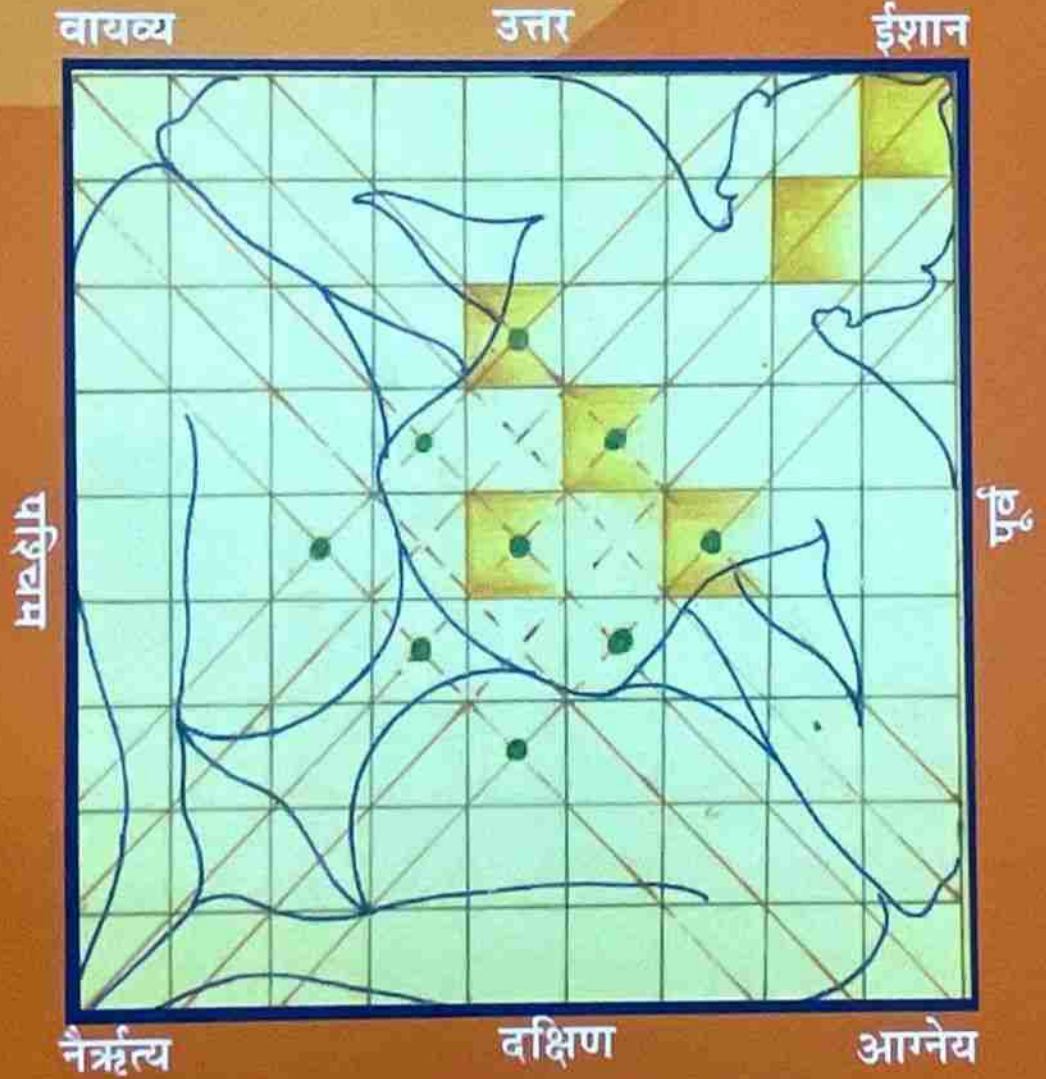

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
नवदेहली-110016

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला-द्वादश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के केयर लिस्ट में सम्मिलित)

प्रधान सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक
डॉ. अशोक थपलियाल
सहाचार्य एवं अध्यक्ष

वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नव देहली-110016

प्रकाशक -
वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय **संस्कृत** विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नव देहली-110016
ISSN :- 0976-4321

© प्रकाशक

संस्करण - 2019
मुद्रण वर्ष - 2021

मूल्य 200/-

प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इस ग्रन्थ के किसी भी अंश का अनुवाद या किसी भी रूप में उपयोग करना सर्वथा वर्जित है।

मुद्रक:
गणेश प्रिंटिग प्रेस
दिल्ली-110016
फोन : 9811663391/93

विषयानुक्रमणिका

1. **वृक्षायुर्वेदे** वराहमिहिरस्यावदानम् — **डॉ. सुशीलकुमारः,** 1-7
सहाचार्यः ज्योतिषविभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
नवदेहली-१६

श्रीखेमराजरेग्मी
शोधच्छात्रः ज्योतिषविभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
नवदेहली-१६

2. वैदिकवाङ्मये वास्तुनिदर्शनम् — **डॉ. हनुमानमिश्रः** 8-12
सहाचार्यः, वेदविभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
नवदेहली-१६

3. वास्तुशास्त्रदृशा जम्बूद्वीपविमर्शः — **डॉ.अशोकथपलियालः** 13-21
सहाचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
नवदेहली-१६

गोविन्दवल्लभः
शोधच्छात्रः, वास्तुशास्त्रविभागः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
नवदेहली-१६

4. जयसिंहनिर्मापितस्य जयपुरनगरस्य वास्तुशास्त्रीयाध्ययनम् — **डॉ. प्रवेशव्यासः** 22-28
सहायकाचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
नवदेहली-१६

श्रीकृष्णचन्द्रशर्मा
शोधच्छात्रः, वास्तुशास्त्रविभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
नवदेहली-१६

RNI/MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

UGC Care Listed

ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

नवम वर्ष, प्रथम अंक

मार्च-अप्रैल 2020

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

Bharatiya Jyotisham

भारतीय ज्योतिषम्

₹ 30

विषय-सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	सौरचान्द्र पंचांग एवं अधिमास	डॉ. अशोक थपलियाल	02
2.	भारतीय परिपेक्ष्य में गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत	विनोद कुमार पाण्डेय	05
3.	संस्कृत ग्रन्थों में वर्णित ज्योतिषशास्त्रीय सन्दर्भ	डॉ. विशाल भारद्वाज	10
4.	वैदिक वाङ्मय में राजधर्म एवं मानवकल्याण	सुनिता कुमारी	14
5.	ज्योतिष की दृष्टि से कृषि मे वृष्टि का महत्त्व	वैजयन्तीमाला	17
6.	नाटक की उत्पत्ति और प्रयोजन	डॉ. हीरालाल दाश	20
7.	रस-मीमांसा (भोजराज और विद्यानाथ के विशिष्ट सन्दर्भ में)	कपिल देव भट्ट	22
8.	आदिवासी समाज का विनाश और वैश्वीकरण का विकास	डॉ. विनोद कुमार विकास पाराशर	26
9.	वेणीसंहार नाटक के धीरोद्धत नायक	डॉ.गीताञ्जली नायक	30
10.	नीतिशतक में जन्मान्तरवाद एवं मोक्ष संबंधी तथ्य	जितेन्द्र कुमार धनवारे	32
11.	भविष्य पुराणोक्त भूमि चयन प्रक्रिया की समीक्षा	रोहित कुमार पचौरी	36

पुनरीक्षण समिति

प्रो. विद्यानन्द झा
प्राचार्यचर - राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

प्रो. क्षेत्रवासी पण्डा
अध्यक्ष - तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रो. भारतभूषण मिश्र
अध्यक्ष - ज्योतिषविभाग,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, क.जे.सौमेया विद्यापीठ, मुम्बई

प्रो. हंसधर झा
अध्यक्ष - ज्योतिषविभाग,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

डॉ. सनन्दन कुमार त्रिपाठी
अध्यक्ष - साहित्यविभाग
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

ISSN 2278 - 0327

RNI/MPHIN/2013/61414
UGC Care Listed
Bi - Monthly
Peer Reviewed
Refereed Journal

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका-संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

प्रधान सम्पादक

डॉ. पी.वी.बी. सुब्रह्मण्यम्

कार्यकारी सम्पादक

अविनाश उपाध्याय

सम्पादक

रोहित पचौरी

डॉ. भूपेन्द्र कुमार पाण्डेय

ज्ञान सहयोग

पिडपर्ति पूर्णय्या विज्ञान ट्रस्ट चैन्नै

प्रकाशक

भारतीय ज्योतिषम्

एल - 108, संत आशाराम नगर,
फेज - 3, लहारपुर,
भोपाल - 462043, मध्यप्रदेश
Web - www.bharatiyajyotisham.com
E.mail : bharatiyajyotisham@gmail.com
Mob : **9752529724, 9039804102**

Jyotirveda-Prasthanam is printed & published by Smt P V N B Srilakshmi on behalf of **Bharatiyajyotisham**
L-108, Sant Asharam Nagar Phase - 3,
Laharpur, Bhopal - 462043
Editor - ROHIT PACHORI

सम्पादकीय

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम् शोधपत्रिका के प्रकाशन में आठ वर्ष बीत चुके हैं। नाम के अनुरूप ही पत्रिका का सम्बन्ध वैदिकवाङ्मय के साथ-साथ वर्तमान कालिक अनेक क्षेत्रों से जुड़ा रहा और जुड़ा रहेगा। शोध क्षेत्र में सम्बद्ध क्षेत्र को अति महत्त्व देने की होड़ में उद्देश्य नीरस होता हुआ दिखाई देता है। इस नीरसता को दूर करने के लिये शोधार्थी की दृष्टि सर्वतोमुख होना अनिवार्य है। सर्वतोमुख शब्द में ही सम्बद्धता गूढ़ रूप से है। अर्थात् चिंतक की सम्बद्धता प्रत्येक विषय से होती है तथा वह परिस्थिति के अनुसार विषय परिवर्तन करता है। किन्तु यदि विषय सम्बद्धता को रूढ कर दें, तो शोधार्थी कभी भी गुप्तम की ओर अग्रसर नहीं हो सकता है। सम्बद्ध विषय में ही असकृत प्रयास मानसिक रूप से भी चिंतक को रूढ़िवादी बना सकता है।

वैदिक चिन्तन में अंगांगी भाव का निर्धारण विभिन्न शास्त्रों में तथा वैदिक संहिताओं के साथ जिस प्रकार से किया गया था। वह एक प्रबल उदाहरण है, सम्बद्धता के नाम से रूढ़ क्षेत्र निर्माण के विरोध का। अन्य क्षेत्रों पर टिप्पणी करना उचित नहीं है। किन्तु संस्कृत वाङ्मय में तो सम्बद्धता के नाम पर विषयों को संकुचित करने की प्रथा न होकर विशाल दृक्पथ को स्वीकार करने की आवश्यकता है। इस आवश्यकता की आपूर्ति यह पत्रिका निरन्तर करती रहेगी।

पत्रिका से सम्बन्धित सभी पद अवैतनिक है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों से प्रकाशक को सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का समाधान भोपाल न्यायालय से ही स्वीकार्य है। शोधलेख आमन्त्रित है। पूर्वप्रकाशित लेख अनुमत नहीं है। लेख से सम्बन्धित विवादों का दायित्व लेखक का ही होगा। लेख को स्वीकार व अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार प्रकाशक को है।

ISSN 2278 - 0327

सौरचान्द्र पंचांग एवं अधिमास

डॉ. अशोक थपलियाल
अध्यक्ष - वास्तुविभाग
श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

हिन्दू पंचांग सौरमान एवं चान्द्र मान दोनों पर आधारित है। विश्व में यह एक मात्र पंचांग या कुछ अर्थों में कलैण्डर है जो दो मानों सौर व चान्द्र पर आधारित है। आंग्ल पंचांग सौरपंचांग है। इस कारण आंग्ल पंचांग का चान्द्रमान अर्थात् तिथि एवं चान्द्रमास से कोई सम्बन्ध नहीं है। वस्तुत: आंग्लजनों के सभी व्रत-पर्वोत्सवों का तिथ्यादि से कोई सम्बन्ध नहीं है। जिस कारण इनका कोई भी पर्वादि कभी पूर्णिमा को हो सकता है तो कभी अमावस्या को अथवा किसी भी अन्य तिथि को। जैसे क्रिसमस डे किसी भी तिथि में मनाया जा सकता है। परन्तु आंग्ल मासारम्भ ठीक सूर्य की संक्रान्ति को भी नहीं होता। अपितु प्राय: उससे 15 दिन पूर्व ही हो जाता है। मासों के नाम, दिनों की संख्या आदि भी यूरोपीय शासकों के इच्छानुसार निश्चित किये गये हैं, जिनमें वैज्ञानिक दृष्टि का पूर्णत: अभाव है। केवल वर्षमान लगभग 365 दिन का माना गया है। मुस्लिम पंचांग विशुद्ध चान्द्रमास पर आधारित है, जिस कारण सौरमास एवं ऋतुओं से इनका कोई सम्बन्ध नहीं रह पाता। फलत: इनके व्रत-पर्वोत्सवादि किसी भी ऋतु में आ सकते है। जैसे रमजान कभी गर्मियों में, तो कभी जाडों में तो कभी वर्षाऋतु में मनाया जाता है। इस मुख्य कारण चान्द्र एवं सौरमान में प्रत्येक वर्ष लगभग 11 दिन का अन्तर होना है। चान्द्रमान के अनुसार एक चान्द्रवर्ष लगभग 354 दिन का होता है जबकि एक सौरवर्ष 365 दिन का। इस कारण प्रत्येक वर्ष मुस्लिम पर्व 11 दिन पीछे होता रहता है।

हिन्दूओं के अधिकांश व्रत-पर्वोत्सव चान्द्रमान पर आधारित हैं। चाहे जन्माष्टमी हो, रामनवमी, दशहरा, होली, रक्षाबन्धन इत्यादि। केवल सौरसंक्रान्तियों पर आधारित पर्व ही सौरमान के अनुसार मनाये जाते हैं। जैसे वैशाखी, मकर संक्रान्ति इत्यादि। यदि विशुद्ध चान्द्रमान से हिन्दुओं के व्रत पर्वोत्सव मनाये जाते तो मुस्लिम पर्वों की तरह होली कभी गर्मियों में मनायी जाती तो कभी सर्दियों में तो कभी बरसात में। अर्थात् हिन्दू व्रतपर्वोत्सवादि का भी ऋतुओं से कोई सम्बन्ध न होता परन्तु ऐसा नहीं है। होली वसन्तऋतु में, गंगादशहरा गर्मियों में, रक्षाबन्धन वर्षा में, दशहरा शरदृतु में तथा दीपावली के बाद ही प्राय: सर्दियां प्रारम्भ होती हैं। ऐसा क्यों? इसका कारण है कि हिन्दूओं द्वारा व्रतपर्वोसवादि का चान्द्रतिथ्यादि के साथ ऋतुओं से भी सम्बन्ध स्थापित करने हेतु प्रत्येक तीन साल में अधिमास संयोजन किया जाता है, जिसे मलमास भी कहते हैं।

अधि+मास, अधि = उपसर्ग जिसका अर्थ है- ऊपर, ऊर्ध्व, अधिकता। मास = परिमाण, *मस्यते परिमीयते असौ अनेन वा।* वस्तुत: सूर्योदय के आधार पर सर्वप्रथम कालगणना प्रारम्भ हुई होगी। तत्पश्चात् चन्द्रमा के एक बार पूर्ण होने से दूसरी बार पूर्ण होने अथवा एक बार चन्द्र के न दिखाई देने से पुन: न दिखाई देने के समय को मास रूप में दूसरा कालगणना का आधार बनाया। चन्द्रमा को वेदों में मास कहा गया है-

सूर्यमासा मिथ: उच्चरात:[1]
सूर्यमासा विचरन्ता दिवि[2]

चन्द्रमा का मास नाम उपर्युक्त काल का वाचक है। चन्द्रमास का सम्बन्ध अधिमास से है। अधिमास की परिभाषा सिद्धान्त शिरोमणि में इस प्रकार कही गई है -

असंक्रान्तिमासोऽधिमास: स्फुटं स्यात्।[3]

संक्रान्तिरहित मास अर्थात् ऐसा चान्द्रमास जिसमे एक भी संक्रान्ति न पड़े। सिद्धान्त ज्योतिष में अमान्त से अमान्त तक को चान्द्रमास स्वीकार किया गया है। इसलिए जिस अमान्त चान्द्रमास के बीच में एक भी संक्रान्ति न पड़े वह मास अधिमास होता है। इसे मलमास, अधिकमास, लौंदमास, असूर्यमास आदि भी कहा जाता है। आचार्यभास्कर का कथन है कि अमान्त के बाद से संक्रान्ति के पहले तक का जो

ॐ

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला - त्रयोदश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका

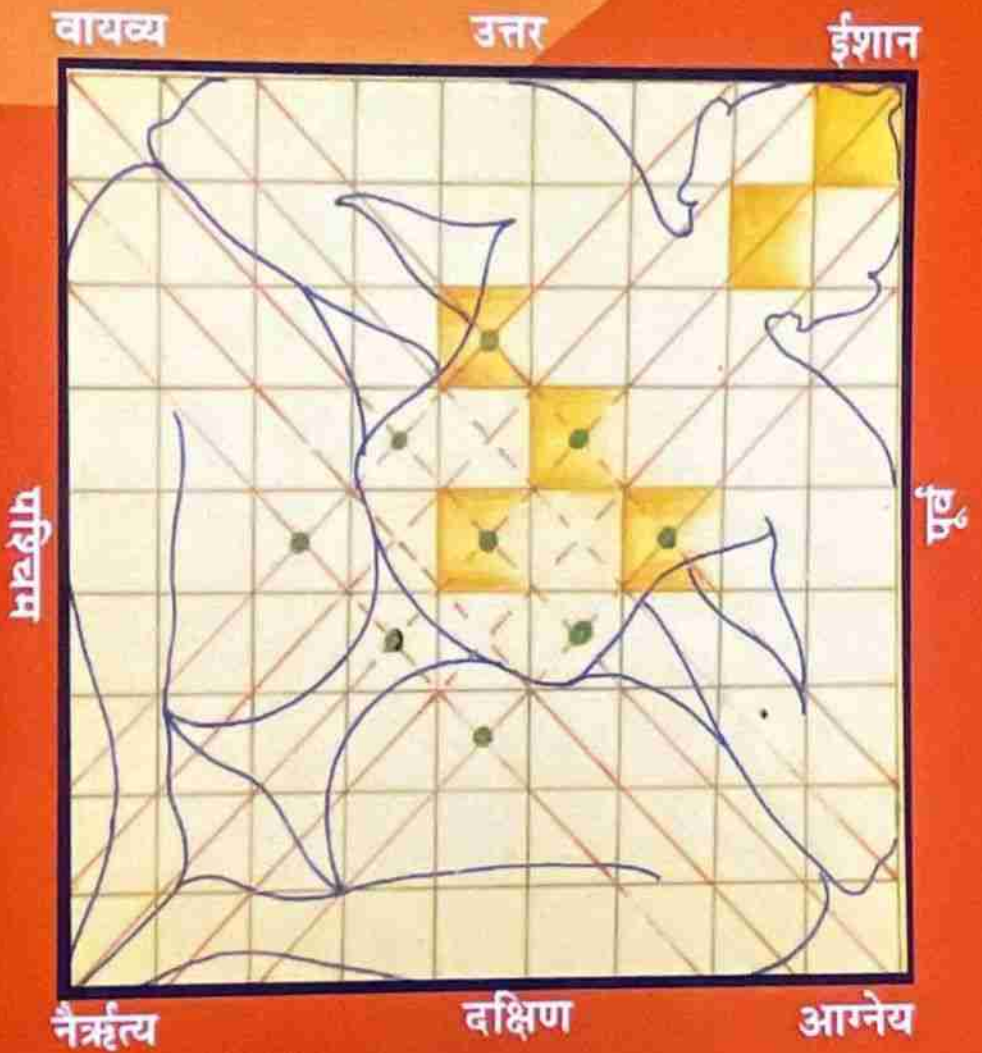

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
नवदेहली-110016

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला-त्रयोदश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के केयर लिस्ट में सम्मिलित)

प्रधान सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक
डॉ. अशोक थपलियाल
सहाचार्य एवं अध्यक्ष

वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नव देहली-110016

प्रकाशक -
वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नव देहली-110016
ISSN :- 0976-4321

© प्रकाशक

संस्करण - 2020
मुद्रण वर्ष - 2022

मूल्य 200/-

प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इस ग्रन्थ के किसी भी अंश का अनुवाद या किसी भी रूप में उपयोग करना सर्वथा वर्जित है।

मुद्रक:
गणेश प्रिंटिग प्रेस
दिल्ली-110016
फोन : 9811663391/93

शोध एवं प्रकाशन समिति

१. डॉ. अशोक थपलियाल, वास्तुशास्त्र विभागाध्यक्ष	अध्यक्ष
२. डॉ. रश्मि चतुर्वेदी	सदस्य
३. डॉ. देशबन्धु	सदस्य
४. डॉ. प्रवेश व्यास	सदस्य
५. डॉ. योगेन्द्र कुमार शर्मा	सदस्य
६. डॉ. दीपक वशिष्ठ	सदस्य

विषयानुक्रमणिका

1.	वास्तुशास्त्रानुसारेण गृहसज्जा	**डॉ. अशोकथपलियालः,** सहाचार्यः वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६ **पंकज सेमल्टी** शोधच्छात्रः वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६	1-7
2.	वास्तुशास्त्रदृष्ट्या बहुतलीयावासीयभवनेषु शालविधानविमर्शः	**डॉ. देशबन्धुः** सहायकाचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६ **विनयकुकरेती ।** शोधच्छात्रः वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६	8-18
3.	व्याकरणशास्त्रदृष्ट्या वास्तुशब्दावलिविचारः	**डॉ. अखिलेश कुमार द्विवेदी** सहायकाचार्यः व्याकरणविभागः महर्षिपाणिनिसंस्कृतवैदिकविश्वविद्यालयः उज्जयिनी, म.प्र.	19-25
4.	राजवल्लभवास्तुशास्त्रानुसारेण गृहारम्भे मासविचारः	**डॉ. प्रवेशव्यासः** सहायकाचार्यः वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६ **आचार्य अमितजोशी,** शोधच्छात्रः वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः नवदेहली-१६	26-30

वास्तुशास्त्रानुसारेण गृहसज्जा

डॉ. अशोक थपलियालः
पंकज सेमल्टी

वास्तुरिति शब्दः 'वस् निवासे' धातुना तृण् प्रत्यय-योगेने निष्पन्नोऽस्ति। 'वस्तुर्वसतेर्निवास **कर्मण**'[1] इत्यस्यानुसारेण मनुष्यो यत्र निवसति सः वास्तुरुच्यते इति। अस्य गृह-देवालय-नगर-ग्रामादयश्च **नैके भेदाः** भवन्ति। मानवाः स्वरूच्यनुसारमेव स्वकीयभवनादीनां निर्माणं कुर्वन्ति। तत्र भवनादीनां निर्माणायापि वास्तुशास्त्रे शुभफलानि प्रोक्तानि -

कोटिघ्नं तृणजे पुण्यं मृण्मये दशसंगुणम्।
इष्टके शतकोटिघ्नं **शैलेऽनन्तं फलं गृहे**।।[2]

गृहं तृणैः निर्मितं स्यात् उत वा आरसशिलैः (संगमरमर marbles) रचितं सुन्दरं भवनम्, तस्य निर्माणस्य फलं तु गृहस्वामी प्राप्स्यत्येव। भवननिर्माणानन्तरं तस्य भवनस्य सज्जायाः अलङ्करणस्य वा प्रश्नस्तु स्वाभाविक एवास्ति। यतोहि को नाम व्यक्तिः सुन्दरं सुसज्जितं भवनं नेच्छतीति। उत्तमप्रकारेणालङ्कृतं भवनमेव रमणीयं नयनाभिरामं वा जायते। इदृशं च भवनं मानसिकशान्तिं प्रददाति। यतोहि यत्किमपि प्रसन्नतां ददाति तदेव सुन्दरता वर्तते। गृहसज्जायारपि मुख्योद्देश्यं मानसिकशान्तिरेव भवति।

सज्जेति शब्दः **'सम् + अज् + टाप्'** इत्यनेन निर्मितोऽस्ति। यस्याभिप्रायो भवति- सौन्दर्यकरणमिति। वास्तुशास्त्रानुसारेण भवनादीनां निर्माणानन्तरं गृहसज्जायारत्यधिकं महत्त्वं जायते। तत्र सज्जायाः अर्थः केवलं वस्तुस्थापनेन नास्त्येव। यतोहि यदि किमपि वस्तु सुन्दरमस्ति तस्यायमर्थो नास्ति यत्तच्छोभनमपि भवेत्। अतः एतत् सज्जाकार्यमपि वास्तुशास्त्रनियमानुसारेणैव कर्तव्यम्। अन्यथा अस्याः विपरीतप्रभावोऽपि भवितुं शक्नोति।

येषां भवनानामलङ्करणं वास्तुनियमानुसारेण नैव क्रियन्ते तादृशेषु भवनेषु निवासेन मानसिकरोगाः सम्भाव्यन्ते। सार्धमेव अभ्यागतेष्वपि निकृष्टप्रभावाः आपतन्ति। गृहसज्जायाः कार्यं प्राकृतिकतत्वानां शक्तीनाञ्च सन्तुलनेन समुचितप्रबन्धनेन शास्त्रीयदृशा भौतिकसुविधानां समुच्चितव्यवस्थापनमप्यस्ति।

शास्त्रीयदृष्टिकोणे कस्याञ्चिदपि कलायां महत्त्वपूर्णं तन्निहितं सौन्दर्यतत्त्वमस्ति। तत्

---

1. निरुक्त 10/02/16
2. बृहदवास्तुमा. अ. 1 श्लो. 5

ॐ

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला चतुर्दश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका

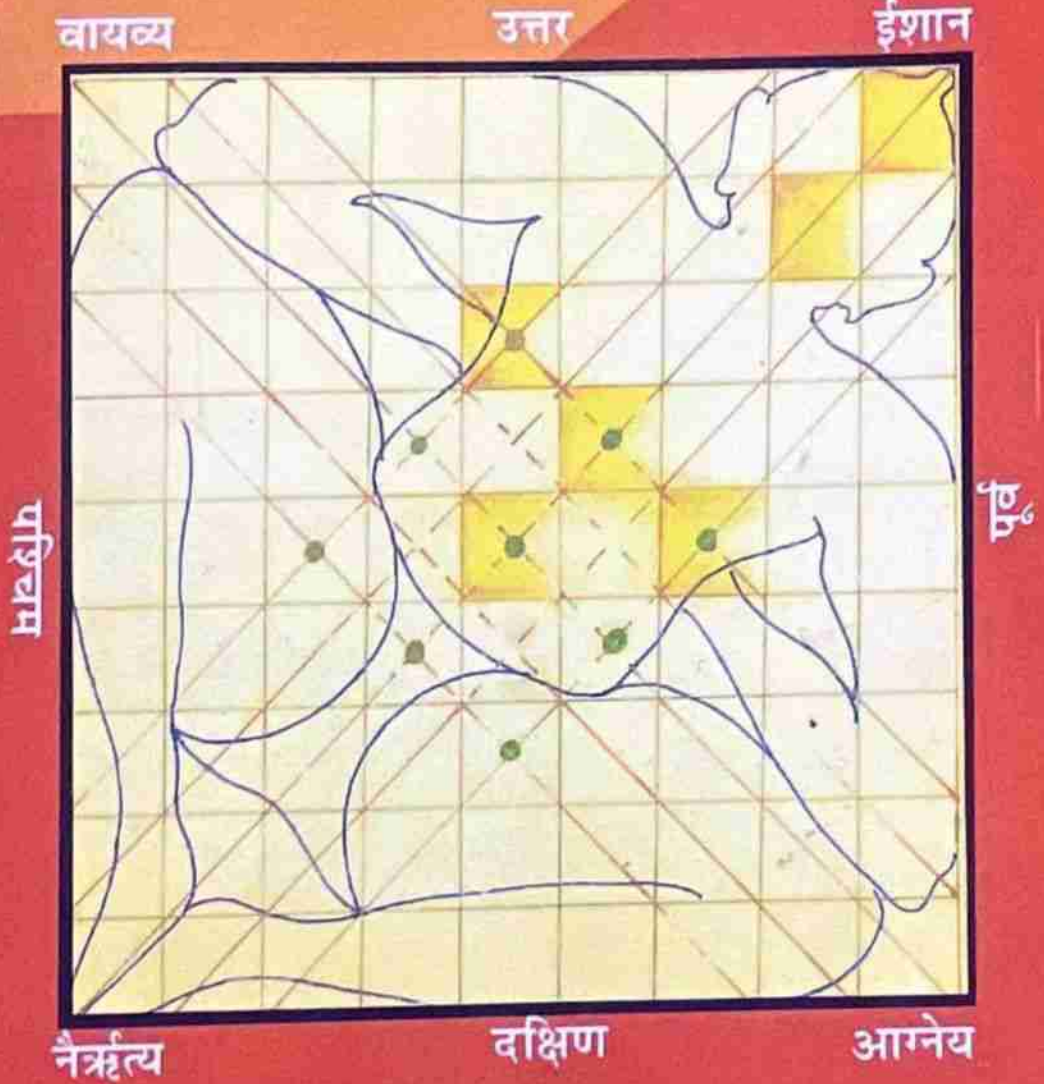

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
नवदेहली-110016

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला-चतुर्दश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के केयर लिस्ट में सम्मिलित)

प्रधान सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक
डॉ. अशोक थपलियाल
सहाचार्य एवं अध्यक्ष

वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नव देहली-110016

प्रकाशक -
वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नव देहली-110016
ISSN :- 0976-4321

© प्रकाशक

संस्करण - 2021
मुद्रण वर्ष - 2023

मूल्य 200/-

प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इस ग्रन्थ के किसी भी अंश का अनुवाद या किसी भी रूप में उपयोग करना सर्वथा वर्जित है।

मुद्रक:
गणेश प्रिंटिग प्रेस
दिल्ली-110016
फोन : 9811663391/93

विषयानुक्रमणिका

1.	भारतीयवास्तुशास्त्रपरम्परा विकासश्च	**डॉ. हरिनारायणन मंकुलथिल्लाय** सहाचार्योऽध्यक्षश्च ज्योतिषविभागः राजकीयसंस्कृतमहाविद्यालयः, तिरुवनन्तपुरम्, केरल	1
2.	वास्तुमण्डनस्य वैशिष्ट्यम्	**डॉ. अशोक थपलियालः** सहाचार्योऽध्यक्षश्च वास्तुशास्त्रविभागः **केवलकुमारः,** शोधच्छात्रः-वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत- विश्वविद्यालयः, नवदेहली	9
3.	नाट्यशास्त्रे वास्तुशास्त्रीयचिन्तनम्	**डॉ. मोहिनी अरोरा** सहायकाचार्या साहित्यविभागः **प्रणवः** शोधच्छात्रः-साहित्यविभागः' केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, भोपालपरिसरः	16
4.	देवानामायतनविमर्शः	**डॉ. देशबन्धुः** सहायकाचार्यः वास्तुशास्त्रविभागः **भूपेश आनन्दः '** शोधच्छात्रः-वास्तुशास्त्रविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत- विश्वविद्यालयः, नवदेहली	31
5.	गृहनिर्माणे शल्यविचारः	**डॉ. वेदप्रकाशपाण्डेयः** ज्यौतिषाचार्यः, रा.सं. महाविद्यालयः, क्यार्टू, हि.प्र.	36

वास्तुमण्डनस्य वैशिष्टयम्

डॉ. अशोकथपलियालः, केवलकुमारः

सूत्रधारमण्डनेन विरचितेषु ग्रन्थेषु शिल्पविद्याविषयकेषु वास्तुमण्डनमेका प्रसिद्धा रचना वर्तते। ग्रन्थस्यास्य कालः चतुर्दश-शताब्द्या उत्तरार्धो वर्तते। परन्तु अयं ग्रन्थः प्रकाशनाभावात् एकोनविंशति शताब्द्यां समुपलभ्यते। ग्रन्थेऽस्मिन् अष्टौ अध्यायाः सन्ति। तत्र वर्णितानां विषयाणां विवेचनं यथाक्रमेण क्रियते। सर्वप्रथमं शङ्का भवति यद् अस्य ग्रन्थस्य लोकोपयोगिता प्रयोजनञ्च किमिति? तर्हि स्वयमेव आचार्यः सूत्रधारमण्डनमहोदय इत्याह-

वास्तुवेदोदधेः किञ्चित्सारमादाय मण्डनः।
बालानामवबोधाय तनुते वास्तुमण्डनम्॥

अत्र च बालानामुपकारकत्वेऽपि तत्र लोकोपकारित्वं कथम्? इत्यत्र अपरस्मिन् श्लोके गृहारम्भस्य प्रवेशपद्धतिवर्णनावसरे निगदितवान्-

शस्तमासे सिते पक्षे चातीते चोत्तरायणे।
चन्द्रताराबले भर्तुः सुलग्ने च शुभे दिने॥[1]

वास्तुमण्डने वर्णिताः योगाः-

कस्यचिदपि कार्यस्यारम्भे ग्रहयोगानां चिन्तनं क्रियते स च योगः कार्यसाफल्याय साहाय्यं करोति। यदि अनिष्टे ग्रहयोगे नूतनकार्यस्य प्रारम्भः क्रियते चेत् कार्यस्य नाशोऽपि जायते, अतः सः योगः त्याज्यो भवति। अथ च के योगाः त्याज्याः के च स्वीकर्त्तव्याः इत्यत्र वास्तुसारमण्डनकारः कथयति त्याज्ययोगान् आदाय यथा-

मुसलः सप्तमी भानौ संवर्त्तकः प्रतिपद् बुधेः।
कर्कस्त्रयोदशाङ्के स्याद्वारतिथ्योस्त्रयं त्यजेत्॥[2]

सप्तम्यां तिथौ यदि रविवासरो भवति तदा मुसलयोगः यदि प्रतिपत्तिथौ बुधवासरश्चेत् संवर्तकयोगः एवमेव कर्कलग्नं त्रयोदशी च शुभकार्यस्य कृतेऽनिष्टकारकं भवति अत एते त्याज्याः। तथैव यमघण्टकयोगः कदा भवति इत्यत्र आह वास्तुमण्डनकारः

विशाखार्द्रामूलं कृत्तिका रोहिणीकरः।
अशुभोऽर्कादिवारेषु यमघण्टः प्रजायते॥

यदा मघा-विशाखा-आर्द्रा-मूल-कृत्तिका-रोहिणी-हस्तनक्षत्राणि क्रमेण रवि-सोम-भौम-

---

1 वास्तु.म. 1/3

2 वास्तुमण्डनम् 1/9

UGC - CARE LISTED

ISSN-2321-7626
Vol. XXXIII, Year X
अगस्त-अक्टूबर, 2022

पाणिनीया
PĀṆINĪYĀ

त्रैमासिक - सान्दर्भिक - पुनरीक्षितशोधपत्रिका
(Quarterly Refereed and Reviewed Research Journal)

महर्षिपाणिनिसंस्कृत-एवं-वैदिकविश्वविद्यालयः, उज्जयिनी (म.प्र.)

UGC - CARE Listed

Vol. XXXIII, Year X
ISSN-2321-7626
अगस्त-अक्टूबर, 2022

पाणिनीया
PĀṆINĪYĀ

त्रैमासिक-सान्दर्भिक-पुनरीक्षितशोधपत्रिका
(Quarterly Refereed and Reviewed Research Journal)

महर्षिपाणिनिसंस्कृतवैदिकविश्वविद्यालयः
देवासमार्गः, उज्जयिनी, मध्यप्रदेशः, भारतम्

अणुसङ्केतः (E-mail) - mpsvv.paniniya@gmail.com
अन्तर्जालपुटम् (Website) - www.mpsvv.ac.in

प्रधानसम्पादकः
प्रो. विजयकुमारः सी.जी.
कुलपतिः

प्रबन्धसम्पादकः
डॉ. तुलसीदासपरौहा
सह आचार्यः विभागाध्यक्षश्च
संस्कृतसाहित्यविभागः

सम्पादकः
डॉ. शुभम् शर्मा
सहायकाचार्यः प्र. विभागाध्यक्षश्च
ज्योतिष-एवं-ज्योतिर्विज्ञानविभागः

सहायकसम्पादकाः

डॉ. पूजा उपाध्यायः
सहायकाचार्या
विशिष्टसंस्कृतविभागः

डॉ. अखिलेशकुमारद्विवेदी
सहायकाचार्यः प्र. विभागाध्यक्षश्च
वेद-एवं-व्याकरणविभागः

डॉ. उपेन्द्रभार्गवः
सहायकाचार्यः प्र. विभागाध्यक्षश्च
योगविभागः

डॉ. संकल्पमिश्रः
सहायकाचार्यः
वेद-एवं-व्याकरणविभागः

प्रकाशकः
कुलसचिवः
महर्षिपाणिनिसंस्कृतवैदिकविश्वविद्यालयः, उज्जयिनी (म.प्र.)

सदस्यताशुल्कम्

वार्षिकम् - 3000/-
मूल्यम् - 725/- डाकव्ययः 50/-

अनुक्रमणिका

	शुभकामना संदेश	iii
	कुलपतिसन्देशः	v
	सम्पादकीयम्	vi
	संस्कृत - प्रभागः	
1.	दृग्दृश्यविवेकः एकं ससामान्याध्ययनम् **- डॉ. के. रतीष्**	1
2.	वैदिकयुगे सभा समितिश्च **- डॉ. अविनाशगायेनः**	6
3.	वीणापाणिपाटनीप्रणीतायामपराजितेति लघुकथायां प्रतिविम्बिता नारीसमस्या **- श्रीशशांकशेखरपात्रः**	12
4.	वैदिकार्षस्मृतिवाङ्मयेषु संन्यासाश्रमविमर्शः **- डॉ. श्रुतिकान्तपाण्डेयः**	19
5.	शब्दस्य पृथक् प्रमाणत्वविचारः **- डॉ. अजीमोन सी.एस.**	25
6.	चम्बाजनपदस्य स्थापत्यकलायाः परिचयः **- सन्तोषकुमारः,** **- डॉ. देशबन्धुः**	30
7.	वैदिककालीनऋषिसंस्कृतिः - तस्य च पुनः प्रतिष्ठापनाय वेदाश्रयत्वम् **- जयश्री पाल**	38
8.	अभिनवभारत्याः रीतिशास्त्रसङ्केताः, तन्त्रयुक्तयश्च - समन्वयः, समीक्षा च **- आर्या ए. वर्मा**	43
9.	वेदेषु गृहसज्जाया अवधारणा **- पंकज सेमल्टी** **- डॉ. अशोक थपलियाल**	49
10.	शाब्ददर्शनदृष्ट्या शब्दस्वरूपविमर्शः **- एकराजपौडेलः**	55

वेदेषु गृहसज्जाया अवधारणा

पंकज सेमल्टी*, डॉ. अशोक थपलियाल**

शोधसारः - भारतीयपरम्पराया मूलम्भजन्तो वेदा महर्षिणा धृतधर्मनेत्रेण भगवता परमकारुणिकेन बादरायणेन शिष्यहितनिमित्तैकभूतेन चतुर्षु भागेषु विभक्ताः। वेदनाम्ना प्रथितेष्वमीषु शास्त्रेषु धर्माधर्मौ, नयापनयौ, पापपुण्ये, सुकृतदुष्कृते, विचाराचाराहारविहाराशनवसनभवनादीनां सर्वेषामपि मौलिकतत्त्वानां वा तत्त्वानाञ्ज्ञानविज्ञानोहापोहादीनां वा सकलशास्त्रप्रवेशनिमित्तभूतानान्त-त्त्वानाम्भौतिकानां वा पदार्थानां संकलनं कृतम्। वेदेष्वमीषु च गृहस्य गृहप्रकाराणां ध्वनिशक्तया गृहसज्जानिमित्तं मौलिकाः पदार्थाः सङ्केतिता वर्तन्ते। ऋग्वेदकाले गृहस्यान्तःपुर एव पृथक्पृथग्गृहस्य शोभां वर्धयन्त्योऽग्निशालाः पशुशालाश्चावर्तिषत। गृहसज्जाविचारावसरे गृहे कक्षस्यातितराम्महत्त्वमाद्रियते तथा च कक्षोऽपि गृहस्य शोभाधायकतया वर्तते। तत्र यूपनिर्माणं स्तूपनिर्माणम् आसन्दिकापर्यंकादिनिर्माणं च विस्तरेण वर्णितमस्ति। अनेन प्रकारेण वेदेषु गृहसज्जाविषये विशदचर्चा समुपलभ्यते। प्रस्तुतशोधपत्रे वेदेषु गृहसज्जाया अवधारणा प्रदर्शिता अस्तीति।

शब्दकुंजिकाः - नयापनयौ - नीतिः अनीतिश्च, वाङ्मये-साहित्ये, परेषाङ्गृहे- अन्यजनानां गृहे, धनधानी - कोषः धान्यगृहं वा, त्रिवरुथगः/ त्रिभुजशयानः/ त्रिधातुशर्मनः- वैदिककाले त्रिभूमिकागृहस्य संज्ञा, यूपः- स्तंभः, स्तूपः - मृतिकादिभिः निर्मित उच्चाकृतिविशेषः (टीला), स्थूणः- स्तम्भः, छदिस्- छत इति हिन्दी भाषायां, तितउना - चलनी इति हिन्दी भाषायां, मृण्मये-मृतिकाभिः निर्मिते।

*शोधछात्र, वास्तुशास्त्र विभाग, श्री ला.ब., शा.रा.सं.वि.वि., नईदिल्ली
**सहाचार्य, वास्तुशास्त्र विभाग, श्री ला.ब., शा.रा.सं.वि.वि., नईदिल्ली

UGC CARE List (Arts and Humanities) RNI : UTTMUL00028 ISSN : 2347-9892

शोधप्रज्ञा

Śodha-prajñā

अर्द्धवार्षिकी, अन्तराष्ट्रिया, मूल्याङ्किता, समीक्षिता च शोधपत्रिका

Biannual, International, Refereed / Peer Reviewed and
UGC CARE Listed (Arts & Humanities) Research Journal

वर्षम् - दशमम् अङ्कः - विंशतिः जूनमासः - 2023

प्रधानसम्पादकः
प्रो० दिनेशचन्द्रशास्त्री
कुलपतिः

सम्पादकः
डॉ. अरुणकुमारमिश्रः

सहसम्पादकः
श्रीमतिमीनाक्षीसिंहरावतः

प्रकाशकः
उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः
हरिद्वारम्, उत्तराखण्डम्

Śodha-prajñā

UGC CARE Listed (Arts and Humanities)
(Half-Yearly, International Refereed & Peer Reviewed Research Journal of Uttarakhand Sanskrit University)

Chief Editor : Prof. Dinesh Chandra Shastri

Editor : Dr. Arun Kumar Mishra
Co. Editor : Smt Meenakshi Singh Rawat

Editors
Prof. Dinesh Chandra Chamola
Dr. Kamakhya Kumar
Dr. Harish Chandra Tiwadi
Dr. Vinay Sethi
Dr. Ajay Parmar
Dr. Suman Prasad Bhatta
Dr. Kanchan Tiwari
Sh. Sushil Chamoli

Reviewer
Prof. Upendra Kumar Tripathi
Prof. Ranjan Kumar Tripathi
Dr. Pratibha Shukla
Dr. Shailesh Kumar Tiwari
Dr. Bindumati Dwivedi
Dr. Ved Vrat
Dr. Arun Kumar Mishra

Managing Editor
Shri Girish Kumar Awasthi

Finance Controller
Shri Lakhendra Gothyal

We are bound to grant an international platform for researchers in the area of Sanskrit Studies. We welcome the papers related to Sanskrit Studies including all the fields like veda, Vedic Sahitya, Darshan, Sanskrit Poetics, Sanskrit Literature, Sanskrit Grammar. Epics, Puranas, Jyotish, Comparative literature, Interdisciplinary and Oriental Studies. We would like to encourage papers related to Ancient Indian Sciences and Philosophy.

We invite authentic, scholarly and unpublished research papers for publication. Research papers submitted for publication will be evaluated by the refrees of the Journal and only those which receive favourable comments, will be published and the author will be informed.

RNI : UTTMUL00029 ISSN : 2347-9892
© Uttarakhand Sanskrit University, Haridwar, Uttarakhand, India
Subscription Charges
Rs. 500/- Single copy Rs. 1000/- Annual Rs. 5000/- Five Years

The views expressed in the publication are the individual opinion of the author(s) and do not represent or reflect the opinion of the Editor and Editorial board nor subscribe to these views in any way. All disputes are subject to jurisdiction of the District Court Haridwar, Uttarakhand only.

Editor-in-Chief
For Subscription and related enquiries feel free to contact :
The Managing Editor
Śodha-prajñā
Uttarakhand Sanskrit University
Bhadrabad, Haridwar - 249402
(Uttarakhand) India.

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	नाम	पृष्ठ सं.
1.	डॉ. निरञ्जनमिश्रस्य वेणुसंवरणे प्रकृतिचित्रणम्	डॉ. प्रकाशचन्द्रपन्तः	1
2.	रीतिसम्प्रदायस्य श्रीमद्भगवद्गीताया आलोके काव्यात्मबोधविचारः	डॉ. कंचन तिवारी	8
3.	नाट्यमण्डपनिर्माणे वास्तुविमर्शः	डॉ. नीरजतिवारी	12
4.	पर्यावरणसंरक्षणे यज्ञः	प्रो. हनुमानमिश्रः	19
5.	स्याद्वादनये सप्तभङ्गीविमर्शः	आशुतोषकाला	23
6.	ऋग्वेददृष्ट्या देवतानामनुशीलनम्	अरुण ममगाईं	29
7.	श्रीभार्गवराघवीयमहाकाव्यदिशा वत्सलरसविवेचनम्	अभिषेक परगाईं डॉ. कंचन तिवारी	34
8.	श्रीमद्भागवतदशमस्कन्धस्थवेणुभ्रमरगीतयोः समासक्तिसेवनम्	शान्तिप्रसादमैठाणी डॉ. राकेशकुमारसिंहः	40
9.	अनूदितसंस्कृतसाहित्ये स्वामिविवेकानन्दस्य अवदानम्	डॉ. सुनीतावर्मन	44
10.	संस्काराणां वैशिष्ट्यम्	डॉ. चन्दनकुमारमिश्रः	50
11.	वैदिकसाहित्ये प्रणवस्वरूपम्	डॉ. अमन्दमिश्रः	54
12.	वैयाकरणाभिमतोपपदपञ्चमीविभक्त्यर्थविचारः	डॉ. मनीषशर्मा	58
13.	शब्दार्थसम्बन्धनित्यत्वम्	हर्षितमिश्रः	61
14.	वैदिकसाहित्ये प्रबन्धनस्य मूलम्	डॉ. नरेन्द्रकुमारपाण्डेयः	70
15.	वेदाङ्गेषु गृहसञ्ज्ञायाः प्रसंङ्गाः	डॉ. अशोकथपलियालः पंकजसेमल्टी	73
16.	अलङ्कारशास्त्रदिशा अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रस्य सूत्रवृत्त्युदाहरणानाम् अध्ययनम्	प्रियांकाबारिकः	79
17.	रुद्रसंहितान्तर्गतसृष्टिखण्डेषु कृत्यप्रत्ययानां विमर्शः	सुशीलकुमारनौटियालः डॉ. राकेशकुमारसिंहः डॉ. अरुणकुमारमिश्रः	83
18.	शिक्षायां निर्मितिवादोऽधिगमश्च	डॉ. सुमनप्रसादभट्टः	86
19.	संस्कृत साहित्य में भक्ति का महत्व	डॉ. अमित भार्गव	92
20.	मनुस्मृति एवं कौटिल्यीय अर्थशास्त्र में शिक्षा का स्वरूप	प्रो. रंजन कुमार त्रिपाठी	95
21.	काव्यशास्त्रीय परम्परा एक अवलोकन	डॉ. वसुन्धरा उपाध्याय	102
22.	वैदिक चिन्तन एवं वैश्विक कल्याण भावना	डॉ. अरुण कुमार मिश्र	108
23.	प्राचीन भारत में वर्ण-कर्मानुसार आवास योजना की संकल्पना का समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ. मौहर सिंह मीना अनुराधा	111

वेदाङ्गेषु गृहसज्जायाः प्रसङ्गाः

डॉ. अशोक थपलियालः
सहाचार्य,वास्तुशास्त्र विभागः,
श्री ला.ब.शा.रा.सं.वि.वि. नवदेहली-१६
पंकज सेमल्टी
शोधछात्रः, वास्तुशास्त्र विभागः
श्री ला.ब.शा.रा.सं.वि.वि. नवदेहली-१६

वेदानामर्थस्फुरणाय वेदार्थम्प्रति जिगमिषूणाञ्जिगमिषावृद्ध्यै क्लिष्टभूतानामर्थानां सरलरीत्या यथा बोधस्यात्तदर्थम्महर्षिभिश्श्रुतिवर्त्मानुसरणशीलैर्वेदाङ्गानां कल्पना विहिता। वस्तुतः ऋषयः मन्त्रद्रष्टारः न तु कर्तारः। दृष्ट्याअनुभूत ज्ञानस्यप्रकटनं स्ववाण्या स्वल्पशब्देषु च ऋिषिभिः कृतम्। तैः स्वशिष्येभ्य वेदज्ञानं प्रदत्तम्, स्वल्पशब्देषु रचितानां वेदानां भावावबोधः कालान्तरेण दुष्करोः जातः। अतः वेदाङ्गानि प्रवृत्तानि तद्यथा। उपनिषत्सु वेदाङ्गानां सङ्ख्या षड्विति विश्रुतपूर्वा। प्रायेण पाणिनीयशिक्षाया श्लोकोऽसौ प्रकृतविषये सर्वख्यातो वर्तते। पाणिनीयशिक्षायां षण्णां वेदाङ्गानान्तदन्वेतेषां किमङ्गत्वमित्यपि ग्रन्थकारेण स्फुटीकृतं वर्तते। पाणिनीयशिक्षाकारमते छन्दश्शास्त्रम्पादो वर्तते, कल्पशास्त्रमदो हस्तो वर्तते, ज्योतिषाङ्गणनाधारभूतं लगधप्रवर्तितं शास्त्रं नयनं वर्तते, ध्वनिग्रहणनिमित्तभूतङ्कर्णं वेदशास्त्रस्य च निरुक्तशास्त्रं वर्तते, गन्धग्रहणतत्परं यथास्माकं नासिका तद्वदेव वर्णोच्चारविधेर्नियामकं शिक्षाशास्त्रं घ्राणत्वनोरीकृतं वर्तते, प्रधानञ्च षट्स्वङ्गेषु सर्वेषामेव शास्त्राणां मौलिकं मुखाङ्गभूतं व्याकरणशास्त्रमस्ति। एवम्प्रकारेण वेदानामर्थस्फोटकारीण्यमूनि षडङ्गानि राजन्तेतमाम्। षट्सु वेदाङ्गेषु यथाङ्गं विषया समलङ्कृता वर्तन्ते। वेदानामेव नापितु सकलमानवजनकल्याणनिमित्तैकभूता विषया अपि प्रकृताङ्गेषु दृश्यन्तेतराम्। मुख्यम्प्रतिपाद्यं वेदत्वादितरे विषया सङ्Q्केतेनैव निर्दिष्टा आहोस्विद्विस्तरभिया सङ्क्षेपेणोपस्थापिता।

छन्दः

छन्दःसंस्कृतजगत्याम्भवत्वन्यासु संस्कृतिषु भाषासु वा भवत्वेकं महत्वपूर्णं वेदाङ्गभूतं वर्तते यो लौकिकानपि रसयतीव दृश्यते। छन्दो लयबद्धानामक्षराणामाधारे निर्धारितम्भवति। छन्दो नाधुनिकैः परिष्कृतमपित्विदं वैदिककालादेवर्षिभी रञ्जितमेकं समस्ताक्षरनियमनमनोविनोदात्मकमक्षराधारितं शास्त्रम्भवति। वेदस्यापौरुषेयस्य षट्स्वङ्गेष्विदञ्छन्दः पादपन्निगदितम्। छन्दःशास्त्रस्यामुष्य प्रवर्तको नियामकःपिङ्गलनामधेय कश्चिदृषिवत्पुरुषो विदितः। अथास्य कृतिश्छन्दश्शास्त्रमिति संज्ञयोच्यते। अस्यापरमभिधानम्पिङ्गलशास्त्रमपि विद्वद्भिर्व्याह्रियते। श्रुतिषुच्छदसां नैके नियमाःसर्वतन्त्रस्वतन्त्रतया भ्राजन्ते। श्रौतच्छन्दसाङ्गणनापि श्रुतावेव द्रष्टुं शक्यते।

कल्पः

कर्मकाण्डस्य विविधकर्मणां नियामकमिदं शास्त्रं वेदाङ्गेष्वेकं वर्तते।कल्पशब्दस्य च विधिरर्थो वर्तते। विग्रहश्च कल्प्यते विधीयते असौ इति भवति। कल्पशास्त्रस्य प्रतिपाद्यविषयेषु प्राधान्येन यागाः संस्काराश्च कथिताः। कल्पशास्त्रं चतुर्षु विषयेषु व्यस्तं वर्तते। ते च चत्वारो विषयाः-श्रौतगृह्यधर्मशुल्बाख्याः। प्रायेण आदिमास्त्रयो विषयाः सर्वेषां वेदानां प्राप्यन्ते परं शुल्वेति विषयः यजुःसंहितायामेव प्रशस्तो वर्तते। वैदिकविषयैस्सार्धममीषु कल्पेषु गृहसम्बद्धा विषया अपि चर्चितासन्ति। यज्ञवेदीनिर्माणे बोधायन-आपस्तम्ब- कात्यायनशुल्वसूत्राणां तथा च भूमिचयन-भूशोधन-भूमिपूजनादिके शांखायन-पारस्कर-आश्वलायनगृह्यसूत्राणां महत्त्वमस्ति। गृह्यसूत्रेषु गृहस्य तथास्य सज्जायां प्रयुज्जानानां वस्तूनां सङ्केतोऽत्र लभ्यते। गृहस्य बहिः यज्ञशालाया निर्माणं कर्त्तव्यमिति सङ्केतोऽत्र पारस्करगृह्यसूत्रे प्राप्यते। षोडशसंस्कारेषु विवाहसंस्कारस्य, मुण्डनस्य, यज्ञोपवीतस्य, केशान्तस्य, सीमन्तोन्नयनस्य विधिर्गृहबहिर्निर्मितेनाग्निकुण्डादग्निमादायैव सम्पादनं कर्तव्यम् इत्युपदेशो वर्तते। अतः गृहसज्जाविचारावसरे गृहस्य बहिर्यज्ञशाला निर्मातव्या भवति। गृहे आसनानां निर्माणं कृत्वा गृहसज्जा सम्पादनीया

RNI/MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

UGC Care Listed

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

वर्ष - 12, अंक - 2 मई - जून 2023

आज़ादी का अमृत महोत्सव

Bharatiya Jyotisham
भारतीय ज्योतिषम्

International Day of Yoga 21st June

Yoga for Harmony & Peace

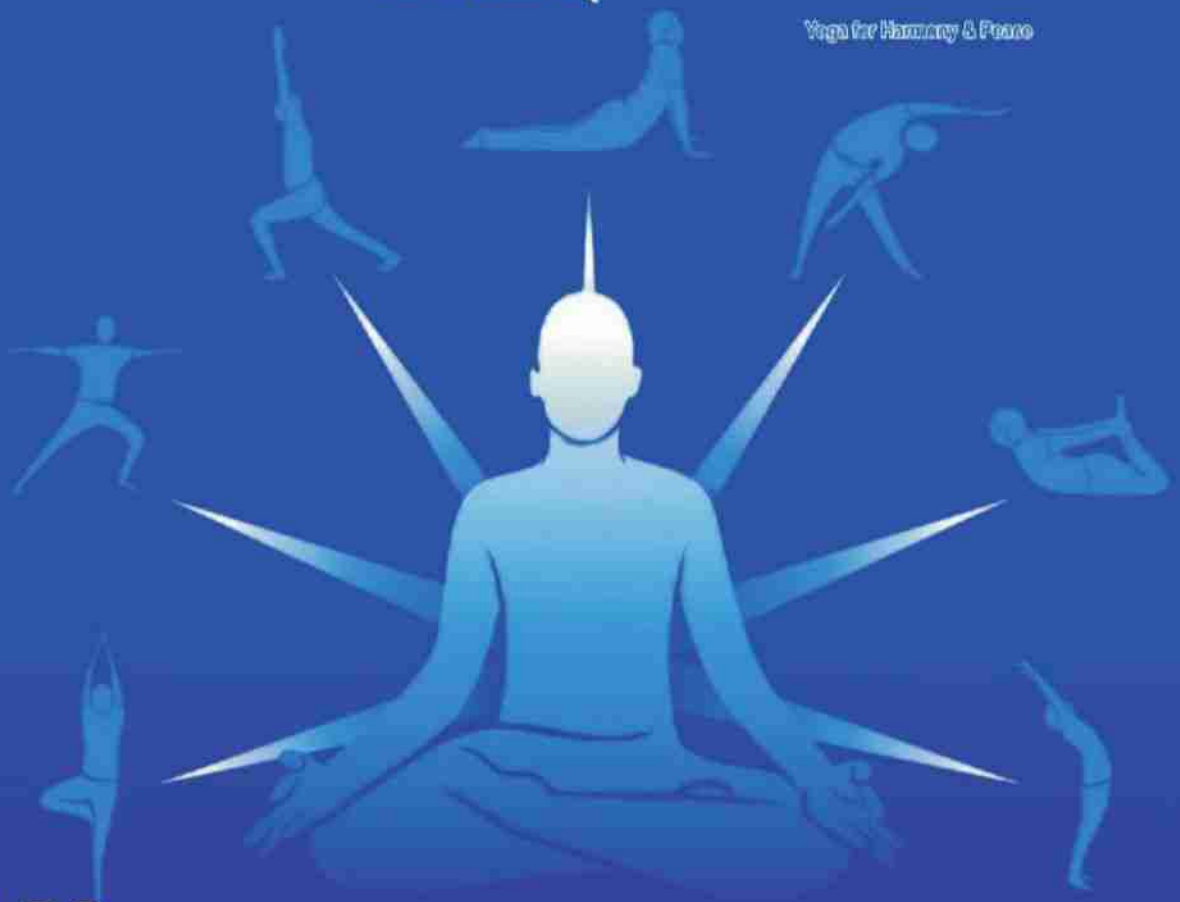

₹ 30

ISSN 2278 - 0327

RNI/MPHIN/2013/61414
UGC Care Listed

Bi - Monthly
Peer Reviewed
Refereed Journal

Bharatiya Jyotisham
पर्येति भावयन् लोकान्

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका-संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

प्रधान सम्पादक

प्रो. पी.वी.बी. सुब्रह्मण्यम्

कार्यकारी सम्पादक

अविनाश उपाध्याय

सम्पादक

डॉ. रोहित पचौरी

डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल

ज्ञान सहयोग

पिडपर्ति पूर्णय्या विज्ञान ट्रष्ट चैन्नै

Jyotirveda-Prasthanam is printed & published by
Smt P V N B Srilakshmi
on behalf of
Bharatiya jyotisham
L-108, Sant Asharam Nagar Phase - 3, Laharpur, Bhopal - 462043
Editor - DR. ROHIT PACHORI*

ISSN 2278 - 0327

पुनरीक्षण समिति

प्रो. विद्यानन्द झा
पूर्वप्राचार्य-केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
भोपाल परिसर, भोपाल

प्रो. क्षेत्रवासी पण्डा
अध्यक्ष-तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रो. भारतभूषण मिश्र
निदेशक- केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
क.जे.सौमेया विद्यापीठ, मुम्बई

प्रो. हंसधर झा
अध्यक्ष - ज्योतिषविभाग
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर

प्रो. सनन्दन कुमार त्रिपाठी
अध्यक्ष - साहित्यविभाग
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर

प्रो. श्रीगोविन्द पाण्डेय
आचार्य- शिक्षाशास्त्रविभाग
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर

डॉ. अशोक थपलियाल
अध्यक्ष - वास्तुविभाग
श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रकाशक

भारतीय ज्योतिषम्

एल - 108, **संत आशाराम नगर,**
फेज - 3, **लहारपुर,**
भोपाल - 462043, **मध्यप्रदेश**
Web : www.bharatiyajyotisham.com
E.mail : bharatiyajyotisham@gmail.com
Mob : 9752529724, 9039804102

सम्पादकीय

भारत की वास्तविक परम्परा आज भी गाँवों में देखने को मिलती है। अभी भी वास्तविक भारत गाँवों में ही बसा है। हैन्दव परम्परा का प्रत्येक कार्य शुचि और शुभ्रता पर ही आधारित होते हैं। भोजन निर्माण व भोजन करते समय परिपालित स्वच्छता, आंगन को गोमय से लेपित करने की परम्परा, आंगन में औषधगुणयुक्त तुलसी से अलंकृत करने की प्रथा, घर के चारों ओर औषधयुक्त वृक्षों को बढ़ाने का प्रकृतिप्रेम तथा शुभ्रता के प्रति निष्ठा भारत की जीवनशैली में अनादि से ही देखने को मिलती है जो आज ढोंग तथा अनुकरण में धीरे-धीरे लुप्त होती नजर आ रही है।

वर्तमान स्वच्छभारत अभियान किसी समय भारत का ही पर्याय हुआ करता था। घर के कार्य देखने वाली गृहिणी से लेकर नौकरी पेशा गृहस्वामी तक जो आचार व्यवहार हुआ करते थे वे स्वच्छता के प्रतीक ही होते थे।

धर्म के लिये राम को, कर्म के लिये कृष्ण को, भक्ति के लिये प्रह्लाद को सतीत्व के लिये सावित्री को, दान के लिये कर्ण को, शिष्य के लिये एकलव्य को, काव्य के लिये कवि वाल्मीकी को स्मरण करने वाले भारतवासी को आजादी के लिये उन अमर वीरों को याद करने के लिये कहने की आवश्यकता नहीं है। किन्तु स्वाभिमान तथा राष्ट्र के प्रति प्रेम एवं जागृति के गिरते आंकड़े आज कुरबानियों को याद करने के लिये बोलने को विवश कर रहे है।

हे! संस्कृत एवं संस्कृति के उपासक! जागो और अपने वास्तविक प्राचीन रूप को धारण कर लो। भारतवासी जैसे रहना प्रारम्भ करो। स्वच्छता तथा स्वराज्य एवं स्वराष्ट्र के प्रति तुम्हारे खून में घुले हुये वे प्राचीन तत्त्व अपने आप जागृत हो जायेंगे। तुम भारतीय हो। अन्दर निक्षिप्त उस भारतीयता को जगाओ।

हम कभी ईर्ष्या और द्वेष पर आस्था नहीं रखे हैं। विश्व को एक नीड मानने वाले महान उदारता, सब को एक समान देखने की महान क्षमता केवल भारतवासी का ही विशेष गुण है। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। यह उक्ति गाने के लिये नहीं जीने के लिये है। पहली वरीयता राष्ट्र को।

पत्रिका से सम्बन्धित सभी पद अवैतनिक है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों से प्रकाशक को सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का समाधान भोपाल न्यायालय से ही स्वीकार्य है। शोधलेख आमन्त्रित है। पूर्वप्रकाशित लेख अनुमत नहीं है। लेख से सम्बन्धित विवादों का दायित्व लेखक का ही होगा। लेख को स्वीकार व अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार प्रकाशक को है।

ISSN 2278 - 0327

विषय-सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	मन्दिरस्थापत्यानुशीलन	डॉ. अशोक थपलियाल	05
2.	सरकारी विकास योजनाओं का ग्रामीण समाज में प्रभाव	डॉ. हरिन्द्र कुमार	11
3.	वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में स्वामी विवेकानंद जी का शिक्षा दर्शन की भूमिका	डॉ. समासि पौल	15
4.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और स्वामी जी का शिक्षा दर्शन	डॉ. सोमा सरकार	20
5.	भारतीय सर्वोच्च लेखा परीक्षा संस्था द्वारा कार्यात्मक परिवर्तन एवं पणधारकों से सक्रिय सम्पर्क के सकारात्मक प्रयास	डॉ. सुप्रिया शर्मा	25
6.	भारतीय समाज में भाषायी वैविध्य : नव शब्द सृजनता का आधार	डॉ. योगेन्द्र बाबू , डॉ. हरीश पाण्डेय	30
7.	समकालीन राजनीति और अखिलेश की कहानियाँ	पंकज कुमार	33
8.	संपोषणीय विकास में पारितंत्र-अध्यात्म की खादी एवं गांधी दृष्टि	छविनाथ यादव, अंकित कुमार पाण्डेय	37
9.	दार्शनिक चिंतक पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद का समाज पर प्रभाव	अनुराग सिंह	41
10.	वर्तमान भारतीय परिवेश में महिलाओं की बदलती स्थिति	डॉ. सुनीता सिंह	45
11.	भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों की भूमिका	अमित सिंह	47
12.	नरेन्द्र सिंह नेगी के गढ़वाली गीतों में अभिव्यक्त नारी चेतना	नवनीत	52
13.	डिजिटल इंडिया: साकार होती भारत की परिकल्पना	कु. प्रगति पान्डेय	57
14.	माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का अध्ययन	डॉ. राजकुमारी गोला	63
15.	भारत में समावेशी शिक्षा एवं सतत विकास लक्ष्य : एक अध्ययन	डॉ. राजेश्वरी गर्ग, राजन पटैल	66
16.	वैश्विक महामारी दौरान जन स्वास्थ्य बनाये रखने में नागरी प्राथमिक आरोग्य केंद्रों की भूमिकाओं का अध्ययन	प्रेमकुमार नाईक, डॉ. के. बालराजु	70
17.	वर्तमान समय में यकृत से संबंधित समस्याओं का यौगिक उपचार	मोनिका आनंद, डॉ. राकेश गिरी, डॉ. ऊधम सिंह	74
18.	महिलाओं के आर्थिक विकास में स्वयं समूहों की भूमिका का समाजशास्त्रीय विश्लेषण	राज कुमार सिंह गौर	77
19.	पर्यटन के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्षों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन	निकेता सिंह	80
20.	योग एवं आयुर्वेद का अंतर संबंध : एक विवेचना	आरती कुमारी, डॉ. अभिनव, डॉ. पूजा वर्मा, प्रो. जे.एस. त्रिपाठी	85
21.	नई शिक्षा नीति 2020: एक शैक्षिक अध्ययन	डॉ. मोहन लाल 'आर्य'	89
22.	महिलाओं के विरुद्ध हिंसा : एक समाज वैज्ञानिक अध्ययन	डॉ. हसन बानो	94
23.	राष्ट्रवाद व विवेकानन्द	डॉ. अर्चना चौहान	99
24.	मुरादाबाद महानगर की मलिन बस्तियों के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी मानसिक सुरक्षा पर प्रभाव का अध्ययन	अजय गौतम, प्रो. (डॉ.) राजकुमारी सिंह	103
25.	आदिवासी समुदाय में विद्यालय के परित्याग की समस्या सम्बन्धि अध्ययन - झारखण्ड के हो जनजाति के सन्दर्भ में	डॉ. शशिकान्त यादव	106
26.	भारतीय ज्ञान परंपरा एवं वाणिज्य	ओम प्रकाश, डॉ. हरीश पाण्डेय	109
27.	हरियाणा में महिलाओं के प्रति बढती आपराधिक प्रवृतियों का एक भौगोलिक अध्ययन	दीपक दलाल, प्रोफेसर (डॉ.) अत्तर सिंह	113
28.	ग्रामीण गरीबी उन्मूलन हेतु मनरेगा एक लोकनीति योजना के रूप में कार्यान्वयन का एक अध्ययन : छत्तीसगढ़ राज्य के बालोद जिले के खरथुली ग्राम पंचायत के विशेष सन्दर्भ में	डॉ. राम बाबू	116
29.	दूधनाथ सिंह की संस्मरणात्मक आलोचना : निराला के संदर्भ में	शिव कुमार मेहता, डॉ. सुनील कुमार दुबे	124

ISSN 2278 - 0327

मन्दिरस्थापत्यानुशीलन

डॉ. अशोक थपलियाल
सहाचार्य- वास्तुशास्त्रविभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

भारतीय स्थापत्य की विलक्षण शिल्पकला का दिग्दर्शन मन्दिरों में प्राप्त होता है। *मन्द्यते सुप्यतेऽत्र मन्दिरम्*[1] अर्थात् जहाँ पर विश्राम किया जाता है या सोया जाता है, उसे मन्दिर कहा जाता है। अत: कक्ष, गृहादि को भी मन्दिर कहते हैं। जैसे कि तुलसीदासजी श्रीरामचरितमानस में सीता की खोज में हनुमान जी द्वारा लंका में भ्रमण करने का वर्णन करते हुए कहते हैं-

मन्दिर मन्दिर करि प्रतिसोधा।
देखें जहँ तहँ अगनित जोधा।
गयउ दसानन मन्दिर माहीं।।[2]

इसी प्रकार *मन्द्यते स्तूयते वा मन्दिरम्*[3] अर्थात् जहाँ पर स्तुति की जाती है, मन्दिर कहलाता है। व्याकरणशास्त्र के अनुसार मदि *ङस्वप्ने जाड्ये मदे मोदे स्तुतौ गतौ नाम्नीति इर:*[4] करने से मन्दिरशब्द व्युत्पन्न होता है। साररूप में कहें तो ऐसा स्थान, जहाँ विश्रान्ति प्राप्त हो, प्रसन्नता हो, स्तुति की जा सके, गतिशील हो, वह मन्दिर है। इसको मन्दिर, देवालय, देवायतन, देवस्थान, देवनिकेतन, देवप्रासाद आदि विभिन्न नामों से भी पुकारा जाता है।

परब्रह्म परमेश्वर की प्राप्ति अथवा मोक्षप्राप्ति के मुख्यत: तीन मार्ग कहे गये हैं- ज्ञानमार्ग, कर्ममार्ग एवं भक्तिमार्ग।[5] इनमें भक्तिमार्ग पर चलने में सहायक उपकरण के रूप में मन्दिर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। मन्दिर केवल देव का निवास मात्र नहीं है अपितु साक्षात् देवस्वरूप ही है। अत: अग्निपुराण में कहा गया है-

प्रासादं पुरुषं मत्वा पूजयेन्मन्त्रवित्तम:।
एवमेव हरि: साक्षात् प्रासादत्वेन संस्थित:।[6]

मन्दिर के इस मानवदेहीरूप की कल्पना दो प्रकार से प्राप्त होती है- प्रथम ऊर्ध्वाधर या खड़े हुए (Vertical) रूप में जहाँ जगती पैर, उसके ऊपर जंघारूपी अधिष्ठान, जिस भाग से गर्भगृह के अन्दर का भाग परिलक्षित हो वह कटि, मन्दिर के अन्दर का भाग उदर तथा देवालय का शिखर ही शिर होता है। द्वितीय क्षैतिज या लेटे हुए (Horizontal) रूप में गोपुर पाँव, सभामण्डप उदरभाग तथा गर्भगृह मुखभाग होता है। इन दोनों प्रकार की कल्पना के आधार पर देवालय की निर्मिति दो प्रकार से प्राप्त होती है- तलच्छन्द एवं ऊर्ध्वछन्द।

1- **तलच्छन्द**- प्रवेशद्वार से गर्भगृह तक का लम्बा मन्दिर।

2- **ऊर्ध्वछन्द**- जगती से प्रारम्भ कर शिखर तक लम्बा मन्दिर। अत: मन्दिर केवल भवनमात्र नहीं है अपितु अमूर्त परमेश्वर का प्रत्यक्षमूर्तरूप सकारात्मक ऊर्जाकेन्द्र भी है। इसी कारण प्रभु के प्रतीकस्वरूप मूर्ति के दर्शन पूजनादि के साथ ही देवालय की प्रदक्षिणा का भी विधान है। मन्दिर के शिखर दर्शन को भी जनमानस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समझता है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से विचार करें तो वैदिकयुग में मन्दिरों का प्रचलन लगभग नहीं दिखता है क्योंकि उस समय ज्ञानमार्ग एवं कर्ममार्ग उपासना के मुख्य आयाम थे। उस समय स्तुति, यज्ञ एवं चिन्तन का अधिक महत्व दिखता है। यज्ञ के लिए यज्ञकुण्डों का निर्माण प्रमुखता से होता था। ये ही यज्ञकुण्ड मन्दिरवास्तु का मूल है। यज्ञवेदीमण्डल का ही परिष्कृतरूप मन्दिर है। पौराणिक युग में प्रतिमा पूजन का विशिष्ट महत्व मिलता है, जिस कारण उस काल में भारत में अनेकों मन्दिरों का निर्माण हुआ। पतंजलि भी देवप्रासाद का निर्देश करते हैं[7]। मयमतग्रन्थ में सभा, शाला, प्रपा, रंगमण्डप और मन्दिर को पंचविध प्रासाद कहा गया है।[8] गुप्त, पल्लव, चोल, पाण्ड्य, राजपूत आदि वंशों के राजाओं ने अनेकों मन्दिरों का निर्माण करवाया। अब प्रश्न उठता है कि किस कारण से भारत के प्रत्येक नगर एवं ग्राम में मन्दिरनिर्माण की पुरातनी व्यवस्था दृष्टिगोचर होती है? इस प्रश्न के उत्तर के लिए मन्दिरों के महत्त्व को जानना आवश्यक है। मन्दिरों के महत्त्व को निम्नप्रकार से कहा जा सकता है-

■ **सांस्कृतिक महत्त्व** - मन्दिर सांस्कृतिक चेतना के प्रतीकस्वरूप हैं। संस्कृति के अन्तर्गत हमारी उपासना पद्धति, पारम्परिक रीतियाँ, संस्कार, खान-पान, भाषा, वेश-भूषा इत्यादि आते हैं। मन्दिर में देवप्रतिमा, भित्ति-आलेखन, पूजनपद्धति इत्यादि प्राय: संस्कृति के विभिन्न रूपों को ही परिलक्षित करती है।

■ **ऐतिहासिक महत्त्व**- भारत में बहुत से मन्दिर अत्यन्त प्राचीनकाल से विद्यमान हैं, जिनका अपना ऐतिहासिक महत्त्व भी है। इन मन्दिरों पर उत्कीर्ण शिलालेख, दानपत्रादि के द्वारा अनेक अज्ञात राजवंशों, महात्माओं, ज्ञानीपुरुषों, दानदाताओं, स्थपतियों आदि के विषय में पता चला है। कई मन्दिरों के ध्वंसावशेष प्राचीन गौरवगाथाओं का गान करते हैं। इनका संरक्षण ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विरासत को संजोये रखने के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला-पंचदश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के केयर लिस्ट में सम्मिलित)

प्रधान सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक
प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी
आचार्य एवं अध्यक्ष

वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नव देहली-110016

प्रकाशक -
वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नव देहली-110016
ISSN :- 0976-4321

© प्रकाशक

संस्करण - 2022
मुद्रण वर्ष - 2023

मूल्य 200/-

प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इस ग्रन्थ के किसी भी अंश का अनुवाद या किसी भी रूप में उपयोग करना सर्वथा वर्जित है। शोधलेखों में लेखकों के स्वयं के विचार हैं। शोधलेख में किसी भी प्रकार का विवाद होने पर शोधलेखक स्वयं उत्तरदायी रहेगा।

मुद्रक:
गणेश प्रिंटिग प्रेस
दिल्ली-110016
फोन : 9811663391/93

विषयानुक्रमणिका

1	लीलावत्यां क्षेत्रव्यवहारः	डॉ. विजेन्द्रकुमारशर्मा अध्यक्षः, ज्योतिषविभागः केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वेदव्यासपरिसरः, बलाहरः हिमाचलप्रदेशः	1
2	वास्तुक्षेत्राकृत्यनुसारेणपदविन्यासभेदाः	डॉ. अशोक थपलियालः सहाचार्यो वास्तुशास्त्रविभागः सोनाली, शोधच्छात्रा वास्तुशास्त्रविभागः श्री लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः , नवदेहली	7
3	प्रश्नविचिन्तने प्रश्नवाक्यस्य प्राधान्यम्	डॉ. गिरीश एम.पी. सहायकाचार्यः, संस्कृतविभागः राजकीयसंस्कृतमहाविद्यालयः तिरुवनन्तपुरम्	15
4	चम्बानगरस्य मन्दिराणां वास्तुसंरक्षणे पर्यावरणस्य भूमिका	डॉ. देशबन्धुः सहायकाचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः सन्तोषकुमारः शोधच्छात्रः वास्तुशास्त्रविभागः श्री लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः , नवदेहली	20
5	वास्तुसौख्यग्रन्थोक्तवृक्षपादपाना-मौषधीयगुणविमर्शः	डॉ. प्रवेश व्यासः सहायकाचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः प्राची गुप्ता, शोधच्छात्रा, वास्तुशास्त्रविभागः श्री लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली	28
6	वास्तुशास्त्रे मुहूर्त्तस्योपादेयता	डॉ. रतीशकुमार झा अतिथिव्याख्याता, ज्योतिषविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली- 16	33

वास्तुक्षेत्राकृत्यनुसारेण पदविन्यासभेदाः

डॉ. अशोक थपलियालः तथा सोनाली

वास्तुशास्त्रं व्यावहारिकं शास्त्रमस्ति। व्यावहारिकधरायां प्रत्येकं मनुष्यस्य सुख-समृद्धि-शान्त्यादिप्राप्त्यर्थं विशेषेच्छा भवति। भोजनवस्त्रनिवासानां व्यवस्था सर्वेषां कृते सुलभा भवेदिति राज्यस्य कल्याणाय एकमादर्शसंकल्पं भवति। भारतीयजीवनपरम्परायां चतुर्विधाश्रमाः मानवजीवनस्य पूर्णतासिद्ध्यर्थं महत्वपूर्णाः भवन्ति। अपि च धर्म-अर्थ-काम-मोक्षपुरुषार्थानां प्राप्तिः मानवजीवनस्य लक्ष्यं वर्तते। एतेषां चतुर्विधाश्रमाणां पुरुषार्थानां कृते तथा चाश्रमिणां कृते सर्वप्रथमं वास्तोः आवश्यकता भवत्येव। मानवजीवनस्य कल्याणं वास्तोः प्रमुखम् उद्देश्यं वर्तते। प्राणिमात्रस्य कल्याणाय वेदाः यज्ञयागाद्यर्थं प्रचोदयन्ति। अथर्ववेदस्योपवेदत्वेन स्थापत्यवेदः परिगण्यते। अतः इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं वेदयति योऽसौ वेद इत्युक्त्यनुसारं वेदस्य परमलक्ष्यमेव वास्तुशास्त्रस्यापि लक्ष्यम्। वास्तुशास्त्रं गृहनिर्माणसन्दर्भेऽस्माकं पथप्रदर्शकमस्ति। शास्त्रमिदम् आवासनिर्माणप्रविधीनां विषये चापि मार्गदर्शनं करोति। ऋग्वेदे वास्तोष्पत्तिसंज्ञकदेवस्य स्तुतौ कथितमस्ति यद्वयं सुखयुक्तं रमणीयम् ऐश्वर्ययुक्तञ्च स्थानं प्राप्नुयामः। अस्माकं सदैव कल्याणकारकानि साधनोपकरणानि देहि[1]।

भारतीयवास्तुशास्त्रं सर्वविधसुख-समृद्धि-शान्तिमय-सुविधापूर्णगृहस्य निर्माणयोजनां प्रस्तौति। **वसन्त्यस्मिन्निति वास्तु** अर्थात् यत्र प्राणी निवसति तदेव तद्वास्तु। अतः सामान्यार्थेषु निवासयोग्या भूमिः (भवनं) वास्तु। शिल्पशास्त्रं स्थापत्यशास्त्रञ्च वास्तुशास्त्रस्येवाङ्गे स्तः।[2] वास्तुशब्दस्य निर्वचनं प्रस्तूयता भगवता यास्काचार्येणोक्तम्-'**वास्तुर्वसतेर्निवासकर्मणः**'[3] इति। वास्तुशब्दः **वस् निवासे** धातोः निष्पन्नो भवति। वास्तुशास्त्रशब्दस्य व्युत्पत्तिलभ्योऽर्थोऽस्ति यस्मिन् मनुष्याः निवसन्तीति[4]। अतः निवासयोग्यं स्थानमिति वास्तु। एतदर्थं **वसति** शब्दरूपस्य प्रयोगः क्रियते। हिन्दीभाषायां **बस्ती** शब्दः अपि वास्तोः परिचायकः,परञ्च भेदवशाद् ग्राम-नगरादिभ्यः अस्य शब्दस्य प्रयोगः क्रियते। पाणिनिमतानुसारेण **वस्-निवासे**[5] इत्यस्माद्धातोः **वसेस्तुन्वसेर्णिच्च**[6] इत्यनयोः सूत्रयोः वस् धातोः तुन् प्रत्यये कृते सति वस्तुशब्दो निष्पद्यते। वस् धातौ णित् प्रत्यये कृते सति णित्वादुपधावृद्धिस्तेन वा शब्दो निष्पन्नो भवति। वास् शब्दे

---

1 ऋग्वेद 07-54-01

2 वाचस्पत्यम्

3 निरूक्त -10.02.16

4 सिद्धांतकौमुदी भवादिगण

5 सिद्धान्त कौमुद्याम्,भ्वादिगणे परस्मैपदी

6 उणादिप्रकरणम् सूत्र- 75 व 657

RNI/MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

UGC Care Listed

ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

नवम वर्ष, द्वितीय अंक

मई - जून 2020

Bharatiya Jyotisham
भारतीय ज्योतिषम्

₹ 30

विषय-सूची

	लेख विषय		
1.	पृथिवी का गुरुत्वाकर्षण बल	डॉ. अशोक बघेलपाल	02
2.	भारतीय ज्योतिष में पृथ्वी के आकार की अनुसंधा	डॉ. मृत्युञ्जय कुमार तिवारी	06
3.	दार्शनिक चिन्तन का अनुशीलन एवं विश्व अभ्युदय	डॉ. घनश्याम मिश्र	08
4.	कृषि पाराशरोक्त वृष्टि के पूर्वानुमान का प्रायोगिक अध्ययन	डॉ. नवीन तिवारी	13
5.	कोरोना का ज्योतिषीय विश्लेषण कारण एवं निवारण	डॉ शम्भू दयाल मिश्र	17
6.	शिक्षा व्यवस्था में ऑनलाइन-शिक्षण की आवश्यकता	दीपक तिवारी	20
7.	अग्निदेवता की प्रासङ्गिकता	डॉ. विनीता पाण्डेय	22
8.	गौतम धर्मसूत्रीय न्यायव्यवस्था : एक अवलोकन	दीपक बन्देवार	24
9.	संस्कृत व्याकरण के अवगमन में अष्टाध्यायी पद्धति एवं प्रक्रिया पद्धति की भूमिका	डॉ. वेदानन्द	29
10.	ज्योतिषशास्त्र में वृष्टिविचार	तपति तपस्विता महापात्र	32
11.	शनि : ज्योतिष एवं लाल किताब के अनुसार	सोनाली	34

पुनरीक्षण समिति

प्रो. विद्यानन्द झा

प्राचार्यचर - राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

प्रो. क्षेत्रवासी पण्डा

अध्यक्ष - तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रो. भारतभूषण मिश्र

अध्यक्ष - ज्योतिषविभाग,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, क.जे.सोमैया विद्यापीठ, मुम्बई

प्रो. हंसधर झा

अध्यक्ष - ज्योतिषविभाग,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

डॉ. सनन्दन कुमार त्रिपाठी

अध्यक्ष - साहित्यविभाग
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

ISSN 2278 - 0327

RNI/MPHIN/2013/61414 Bi - Monthly Refereed Journal

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका-संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

प्रधान सम्पादक

डॉ. पी.वी.बी. सुब्रह्मण्यम्

9805034336

कार्यकारी सम्पादक

अविनाश उपाध्याय

9039804102

सम्पादक

रोहित पचौरी

9752529724

डॉ. भूपेन्द्र कुमार पाण्डेय

9754648985

ज्ञान सहयोग

पिडपर्ति पूर्णय्या विज्ञान ट्रष्ट चैन्नै

प्रकाशक

भारतीय ज्योतिषम्

एल - 108, संत आशाराम नगर,

फेज - 3, लहारपुर,

भोपाल - 462043

मध्यप्रदेश

Web - www.bharatiyajyotisham.com

E.mail : bharatiyajyotisham@gmail.com

Mob : 9752529724, 9039804102

Jyotirveda-Prasthanam is printed & published by Smt P V N B Srilakshmi on behalf of Bharatiyajyotisham Pvt. limited. L 108, Sant Asharam Nagar Phase - 3, Laharpur, Bhopal - 462043

Editor - ROHIT PACHORI*

सम्पादकीय

भारत की एक अक्षुण्ण परम्परा है पञ्चाङ्ग परम्परा। वर्षारम्भ या युगादि पर्व का एक महत्त्वपूर्ण अंग है पञ्चाङ्गश्रवण। अर्थात् वर्ष के प्रारम्भ में पञ्चाङ्ग की विभिन्न विशेषताओं के साथ उस वर्ष सम्भावित प्राकृतिक-राजनैतिक-आर्थिक विभिन्न परिस्थितियों पर ज्योतिषीय विश्लेषण को दैवज्ञ प्रस्तुत करते हैं। इस कार्य हेतु तथा पञ्चाङ्गधारियों के निजी परामर्श हेतु पञ्चाङ्ग में एक पूर्व पीठिका के नाम से भाग दिया जाता है। इस भाग में वर्षभर के ग्रहचार, ग्रहण आदि का विवरण प्रस्तुत करते हुये सामूहिक तथा व्यक्तिगत फलों का वर्णन किया जाता है। इसी भाग में वर्षा का निर्णय एवं उपयुक्त फसलों का भी वर्णन किया जाता है। इन सभी के आधार पर पञ्चाङ्ग के अनुयाई तथा परम्परा के अनुयायी अपने वर्ष भर के वार्षिक प्रणाली को अन्तिम रूप दे सकते है।

किन्तु वर्तमान स्थिति सभी से सुपरिचित है। वर्तमान काल में यह परम्परा गौण हो चुकी है। इसको केवल औपचारिकता हेतु निभाया जाता है। इस औपचारिकता के कारण धीरे-धीरे लोगों में पञ्चाङ्गपरम्परा के अनेक विषयों का प्रचार-प्रसार ही नहीं हो रहा है। इस कारण से वे सम्भ्रम स्थिति में रहते हैं तथा उनके चिन्तन में परम्परा सही स्थान प्राप्त कर नहीं पाती है। इन अपूर्ण चिन्तनों के कारण ही विश्व भर में करोना नामक हडकम्प मचने के बाद अनेक सवाल साधे गये है। कोई भी शंकराचार्य क्यों अपने तपोबल से समाप्त नहीं कर पा रहा है? क्यों कोई दैवज्ञ इनका पूर्वानुमान नहीं किया है? इत्यादि प्रश्न सभी के सामने आये हैं तथा समाचार पत्रों में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किये ही हैं।

महामारी से सम्बन्धित सूचना अनेक पञ्चाङ्गों के पूर्वपीठिका में दिया ही गया था। यदि इस बात को गौण मान लेते हैं तो भी वर्तमान समस्या तथा लोगों में उत्पन्न प्रश्नों का प्रमुख कारण तो पञ्चाङ्गों को तथा परम्परा को औपचारिक रूप से निभाना ही है यह स्पष्ट हो जाता है। वर्तमान वैश्विक महामारी एक बार फिर भारत की अस्मिता तथा भारत की परम्पराओं की आवश्यकता पर बल दिया है। देर भले हुआ है किन्तु समय बीता नहीं है। अब अपनी परम्पराओं की ओर तथा प्राचीन पद्धतियों की ओर एवं पञ्चाङ्गों की सम्यगनुपालन की ओर वापस होने का समय आसन्न हो गया है।

पत्रिका से सम्बन्धित सभी पद अवैतनिक है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों से प्रकाशक को सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का समाधान भोपाल न्यायालय से ही स्वीकार्य है। शोधलेख आमन्त्रित है। पूर्वप्रकाशित लेख अनुमत नहीं है। लेख से सम्बन्धित विवादों का दायित्व लेखक का ही होगा। लेख को स्वीकार व अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार प्रकाशक को है।

ISSN 2278 - 0327

पृथिवी का गुरुत्वाकर्षण बल

डॉ. अशोक थपलियाल
अध्यक्ष - वास्तुविभाग
श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

पृथिवी में गुरुत्वाकर्षण बल है। जिस कारण वह गैसीय पदार्थों को छोड़कर अन्य पदार्थों को तुरन्त अपनी ओर खींचती है। आधुनिक विद्वान्, सर आइजैक न्यूटन[1] को गुरुत्वाकर्षण की खोज का श्रेय देते हैं। उन्होंने अपने गणितीय सिद्धान्तों के आधार पर इसे प्रमाणित किया। अतः उनको इसका श्रेय अवश्य मिलना चाहिए, परन्तु स्वाभाविक रूप से प्रश्न उत्पन्न होते हैं कि सेब या अन्य पदार्थों को पृथिवी पर गिरते हुए न्यूटन से पूर्व भी कई लोगों ने देखा होगा। क्या इससे पूर्व गुरुत्वाकर्षण पर किसी का ध्यान ही नहीं गया? जिसने विश्व को दाशमिक प्रणाली, पृथिवी के गोलत्व, अक्षभ्रमण जैसे कई वैज्ञानिक सिद्धान्तों को दिया, क्या उन भारतीयों ने लेशमात्र भी गुरुत्वाकर्षण बल का ज्ञान न रहा होगा? इत्यादि। उपर्युक्त प्रश्नों का उत्तर पृथिवी के गोलत्व की अवधारणा में छिपा हुआ है। पृथिवी गोल है और गोलाकार वस्तु पर गुरुत्व या चुम्बकीय शक्ति के बिना अधो भाग में कोई छोटा सा पदार्थ भी स्थिर खड़ा नहीं रहा जा सकता है, यह स्वाभाविक बात है। पृथिवी गोल है तो उसके नीचे वाले भाग में स्थित समुद्र, पर्वत, मनुष्यादि किस प्रकार स्थिर रह सकते हैं?

पृथिवी के गोलत्व के विषय में सर्वप्रथम ऋग्वेद में चर्चा दिखती है। प्राचीन भारतीय मतानुसार वेद अपौरुषेय हैं। साथ ही अनादि व अनन्त भी हैं। आधुनिक विद्वानों में भी इस विषय में कई मत मतान्तर हैं, परन्तु वेदवाङ्मय की रचना कम से कम 5000 वर्ष पूर्व हो चुकी थी, इस बात को सभी मानते हैं। ऋग्वेद में वृत्रासुर के दूतों द्वारा इन्द्र को पकड़ने हेतु प्रयास करने के सन्दर्भ में कहा गया है कि -

चक्रणासः परीणहं पृथिव्या हिरण्येन मणिना शुम्भमानाः।
न हिन्वानासस्तितिरुस्त इन्द्रं परि स्पशा अदधात् सूर्येण।।[2]

अर्थात्सुवर्णमय अलंकारों से सुशोभित (वृत्र के) दूत पृथिवी की परिधि के चारों ओर चक्कर लगाते हुए तथा आवेश से दौड़ते हुए भी इन्द्र को जीतनें में समर्थ नहीं हुए। (फिर उसने उन) दूतों को सूर्य (प्रकाश) से आच्छादित किया।[3]

इस ऋचा के 'परीणहं चक्राणासः' शब्द से स्पष्ट है कि हमारे ऋषियों को ज्ञात था कि पृथिवी की आकृति गोल है, सपाट नहीं। पृथिवी यदि समतल होती और उसमें गोलत्व न होता। तो फिर सूर्य की किरणें आधी पृथिवी पर एक साथ पड़ती परन्तु इस प्रकार न पड़कर क्रमशः पड़ती हैं, ऐसा वर्णन ऋग्वेद में मिलता है। सविता द्वारा त्रैलोक्य को प्रकाशित करने के सन्दर्भ में कहा गया है कि-

आप्रा रजांसि दिव्यानि पार्थिवा श्लोकं देवः कृणुते स्वाय धर्मणे।
प्रबाहू अस्राक् सविता सवीमनि निवेशयन् प्रसुवन्नक्तुभिर्जगत्।।[4]

अर्थात् दैदीप्यमान (सविता ने) अन्तरिक्ष के, द्युलोक के (और) पृथिवी पर के प्रदेश (तेज से) भर डाले हैं।..... अपनी कान्ति से जगत् को सुलाते एवं जाग्रत करते हुए सविता ने उदित होकर अपनी बाहें फैला दी है।[5]

दिन या रात का कारण स्पष्ट करते हुए ऐतरेय ब्राह्मण में कहा गया है -

स वा एष न कदाचनास्तमेति नोदेति तं यदस्तमेतीति मन्यन्तेऽह्न एव तदन्तमित्वाथात्मानं विपर्यस्यते रात्रिमेवावस्तात् कुरुतेऽहः परस्तादथ यदेनं प्रातरुदेतीति मन्यन्ते रात्रेरेव तदन्तमित्वाथात्मानं विपर्यस्यतेऽहरेवावस्तात् कुरुते रात्रि परस्तात् स वा एष न कदाचन निम्नोचति।[6]

अर्थात् वह (सूर्य) न तो कभी अस्त होता है न उगता है। यह जो अस्त होता है वह दिन के अन्त में जाकर अपने को उल्टा घुमाता है। इधर रात करता है और उधर दिन। इसी प्रकार यह जो सुबह उगता है वह रात्रि का अन्त करके अपने

ISSN 2278 - 0327

RNI/MPHIN/2013/61414

Bi - Monthly
Peer Reviewed
Refereed Journal

Bharatiya Jyotisham
पश्यति भावयन् लोकान्

ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

प्रधान सम्पादक
प्रो. पी. वी. बी. सुब्रह्मण्यम्

कार्यकारी सम्पादक
अविनाश उपाध्याय

सम्पादक
डॉ. रोहित पचौरी
डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल

ज्ञान सहयोग
पिडपर्ति पूर्णय्या विज्ञान ट्रस्ट, चैन्नै

Jyotirveda-Prasthanam is printed & published by
Smt P V N B Srilakshmi
on behalf of
Bharatiya Jyotisham
L-108, Sant Asharam Nagar Phase - 3, Laharpur, Bhopal - 462043
Editor - **DR. ROHIT PACHORI** *

ISSN 2278 - 0327

पुनरीक्षण समिति

प्रो. विद्यानन्द झा
पूर्व प्राचार्य-केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
भोपाल परिसर, भोपाल

प्रो. क्षेत्रवासी पण्डा
पूर्व अध्यक्ष-तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रो. भारतभूषण मिश्र
अध्यक्ष- ज्योतिष विभाग, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
क.जे.सौमेया विद्यापीठ, मुम्बई

प्रो. हंसधर झा
निदेशक
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, राजीव गांधी परिसर

प्रो. सनन्दन कुमार त्रिपाठी
अध्यक्ष - साहित्यविभाग
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर

प्रो. श्रीगोविन्द पाण्डेय
निदेशक
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, गुरुवायूर परिसर

प्रो. अशोक थपलियाल
अध्यक्ष - वास्तुविभाग
श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रकाशक

भारतीय ज्योतिषम्

एल - 108, संत आशाराम नगर, फेज - 3, लहारपुर,
भोपाल - 462043, मध्यप्रदेश
Web : www.bharatiyajyotisham.com
E.mail : bharatiyajyotisham@gmail.com
Mob : 9752529724, 9039804102

सम्पादकीयम् ....

"वेदोऽखिलोधर्ममूलम्" वैदिक ज्ञान भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति का आधार है। यह ज्ञान न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है, अपितु इसमें विज्ञान, गणित, चिकित्सा और दर्शन जैसे कई क्षेत्रों की गूढ़ जानकारियाँ भी समाहित हैं। वेद चार हैं: ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। ये सभी मिलकर वैदिक साहित्य का निर्माण करते हैं और जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने का मार्गदर्शन करते हैं।

आज वैदिक ज्ञान के स्रोत के रूप में वेदों के अतिरिक्त उपनिषद्, ब्राह्मण, आरण्यक, और स्मृतियाँ भी वैदिक ज्ञान के महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं। वेदों को श्रुति माना गया है, अर्थात् यह सुनी हुई बातें हैं, जो ऋषियों ने ध्यान और साधना के माध्यम से प्राप्त की हैं। वेदों में मंत्र, सूक्त, और ऋचाएँ शामिल हैं, जो मुख्य रूप से प्रकृति की आराधना और यज्ञ-कर्मकांड से संबंधित हैं।

वैदिक ज्ञान के प्रमुख क्षेत्र धर्म और आध्यात्म: वेदों में कर्मकांड, यज्ञ, और उपासना का विस्तृत वर्णन मिलता है। इसके माध्यम से व्यक्ति आत्मा और परमात्मा के संबंध को समझ सकता है।

विज्ञान और गणित: यज्ञ की विधियाँ और ज्योतिष शास्त्र में गणितीय सिद्धांतों का प्रयोग स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। सूर्य, चंद्रमा, ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति का वर्णन विज्ञान का अद्भुत उदाहरण है।

चिकित्सा के क्षेत्र में अथर्ववेद आयुर्वेद के मूल में पाया जाता है। इसमें विभिन्न बीमारियों के उपचार और औषधियों के उपयोग का विवरण मिलता है। दर्शन के क्षेत्र में उपनिषदों के ब्रह्मज्ञान, आत्मा, पुनर्जन्म, और मोक्ष के सिद्धांतों का विस्तार से वर्णन है। यही भारतीय दर्शन का आधार है।

आधुनिक समय में भी वैदिक ज्ञान की प्रासंगिकता शाश्वत है और हमेशा रहेगी। योग और ध्यान की विधियाँ, जो वेदों में वर्णित हैं, आज भी मानसिक शांति और स्वास्थ्य के लिए महत्त्वपूर्ण मानी जाती हैं। आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली भी आज के चिकित्सा जगत में अपना विशेष स्थान बनाए हुए है।

वैदिक ज्ञान केवल प्राचीन इतिहास का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह जीवन का मार्गदर्शन करने वाली अनमोल धरोहर है। इसकी शिक्षाएँ आज भी हमें नैतिकता, ज्ञान और आध्यात्मिकता के पथ पर चलने के लिए प्रेरित करती हैं। भारतीय संस्कृति और सभ्यता को समझने के लिए वैदिक ज्ञान का अध्ययन आवश्यक है और इसे संरक्षित करना हमारी जिम्मेदारी है। यह "ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्" उक्त वैदिक ज्ञान के सभी पक्षों को शोधछात्रों, अध्यापकों, अनुसंधाताओं के प्रामाणिक शोधलेखों के माध्यम इस पत्रिका में अपने विचारों के साथ प्रस्तुत करते हैं। यह पत्रिका सम्प्रति प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारियों, विद्यावारिधि, शोधछात्रों, अनुसंधानकर्ताओं आदि के लिए मार्गदर्शक की भूमिका में हमेशा ही अग्रणी और उपयोगी सिद्ध होती रही है। आशा है पाठकों के लिए अपनी प्रामाणिकता शोधपरक लेखों के कारण आगे भी उपयोगी सिद्ध होती रहेगी।

पत्रिका से सम्बन्धित सभी पद अवैतनिक है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों से प्रकाशक को सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का समाधान भोपाल न्यायालय से ही स्वीकार्य है। शोधलेख आमन्त्रित है। पूर्वप्रकाशित लेख अनुमत नहीं है। लेख से सम्बन्धित विवादों का दायित्व लेखक का ही होगा। लेख को स्वीकार व अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार प्रकाशक को है।

ISSN 2278 - 0327

विषय - सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	ज्योतिषशास्त्र के अनुसार नक्षत्रसाधन विमर्श	डॉ. अशोक थपलियाल	04
2.	स्थानबल साधन	डॉ. अनिल कुमार	16
3.	कालापानी : भारत - नेपाल सीमा विवाद	आलोक कुमार सौरभ सिंह डॉ. सत्यपाल सिंह	23
4.	ऑनलाइन शिक्षण द्वारा प्रदान शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृति का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. मोहन लाल 'आर्य'	28
5.	भारतीय चिन्तन परम्परा तथा काव्यशास्त्रों में अभिधा	डॉ. कृष्ण चन्द्र पण्डा	32
6.	शिक्षक-शिक्षा में सीखने की शैलियों का महत्त्व	डॉ. राजकुमारी गोला	36
7.	माध्यमिक स्तर पर कार्यरत् प्रधानाध्यापकों की प्रशासनिक प्रभावशीलता का अध्ययन	गौरव कुमार डॉ. मोहन लाल 'आर्य'	41
8.	मिडिल स्टेज पर अध्ययनरत सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन	उमरा इदरीस डॉ. राजकुमारी गोला	45
9.	क्या भारतीय बाजार में पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए केंद्रीकृत सार्वजनिक खरीद प्रणाली समय की आवश्यकता है?	डॉ. नमिता जैन	49
10.	मनोविज्ञान का संज्ञानात्मक स्वरूप और अधिगम	डॉ. कालिका प्रसाद शुक्ल	54
11.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और उच्चशिक्षा का पुनर्गठन	डॉ. अनूप कुमार पाण्डेय	58
12.	समय की सार्थकता एक विवेचन	डॉ. अर्चना कुमारी	63
13.	वैदिकसाहित्य में पंचमहाभूतों का अभिचिन्तन	डॉ. मोहिनी अरोरा	65

ISSN 2278 - 0327

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार नक्षत्रसाधन विमर्श

डॉ. अशोक थपलियाल
आचार्य-वास्तुशास्त्र
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

पंचांग के पांच अंगों में नक्षत्र साधन महत्वपूर्ण है। नक्ष् + अत्रन्, न क्षीयते क्षरते वा।[1] ' अर्थात् जो कभी घटता या नष्ट नहीं होता है। तैत्तिरीयब्राह्मण में नक्षत्रशब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार दी गयी है-

न वा इमानि क्षत्राण्यभूवन्निति। तन्नक्षत्राणां नक्षत्रत्वम्।।[2]

अर्थात् जो क्षत नहीं हैं वे नक्षत्र हैं। वहीं अन्यत्र में लिखा है कि- *सलिलं वा इदमन्तरासीत्। यदतरन्। तत्तारकाणां तारकत्वम्यो। वा इह यजते। अमुं स लोकं नक्षते। तन्नक्षत्राणां नक्षत्रत्वम्। देवगृहा वै नक्षत्राणि। य एवं वेद। गृहयेव भवति। यानि वा इमानि पृथिव्याश्चित्राणि। तानि नक्षत्राणि। तस्मादश्लीलनामंश्चित्रे नावस्येन्न यजेत। यथा पापाहे कुरुते। तादृगेव तत्।।*[3]

अर्थात् बीच में जल था। चूंकि उसमें तैर गयी इसलिए तारकाओं को तारकत्व प्राप्त हुआ। जो यहाँ यज्ञ करता है, वह उस लोक में जाता है, इसलिए नक्षत्रों का नक्षत्रत्व है। नक्षत्र देवताओं के गृह हैं। जो यह जानता है, वह गृही होता है। ये जो पृथिवी के चित्र हैं, वे नक्षत्र हैं। अतः अशुभ नामवाले नक्षत्रों में कोई कार्य समाप्त नहीं करना चाहिए और न तो यज्ञ ही करना चाहिए। उसमें कार्य करना पापकारक दिन में करने के समान ही है।[4] निरुक्त में नक्षत्र शब्द का निरूपण इस प्रकार किया गया है- *'नक्षत्राणि नक्षतेर्गतिकर्मणः'*।[5]

इस प्रकार नक्षत्र शब्द का अर्थ है जो कभी नष्ट या अपने स्थान से हिलते नहीं हैं। वस्तुतः पृथ्वी की अक्षीय गति पश्चिम से पूर्व की ओर है। जिस कारण पृथ्वी पर स्थित हमें ग्रहों के साथ नक्षत्र भी पूर्व से पश्चिम की ओर चलते दिखाई देते हैं। सर्वप्रथम आर्यभट्ट ने पृथ्वी की अक्षीय गति को कहा-

अनुलोमगतिर्नौस्थः पश्यत्यचलं विलोमगं यद्वत्।
अचलानि भानि तद्वत् समपश्चिमगानि लंकायाम्।[6]

पृथ्वी की अक्षीय गति के कारण पूर्व से पश्चिम की ओर चलते हुए दिखाई देने वाले ग्रह अपने स्वाभाविक पूर्वाभिमुखी गति से चलते हैं। जिस कारण वे नक्षत्रों के सापेक्ष पूर्व की ओर खिसकते हुए दिखते हैं। परन्तु नक्षत्र अपना स्थान बदलते हुए नहीं दिखाई देते हैं तथा ठीक 23 घंटे 56 मिनट 4 सैकेण्ड अर्थात् एक नाक्षत्रदिन के पश्चात् वे अपने पुराने स्थान पर दिखाई देते हैं। इसीलिए नक्षत्रों को न क्षरतीति अर्थात् अपने स्थान से च्युत न होने वाले कहा गया है। इस प्रकार हम नक्षत्रशब्द को परिभाषित कर सकते हैं।

नक्षत्रों के सापेक्ष ग्रह पूर्व की ओर खिसकते हुए दिखते हैं। इसलिए उनकी पूर्वाभिमुखी गति कही जाती है। कोई भी ग्रह जब किसी नक्षत्र विशेष के नजदीक होता है तो उस आधार पर उसका स्थान निर्धारित किया जाता है। जैसे यदि सूर्य हस्त नक्षत्र के पास हो तो कह सकते हैं कि सूर्यनक्षत्र हस्त है जिससे क्रान्तिवृत्त में कन्या राशि में उसकी स्थिति निर्धारित हो जाती है। क्रान्तिवृत्त में ही नक्षत्रों एवं राशियों की स्थिति मानी जाती है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की स्थिति नक्षत्रों के सापेक्ष जानी जाती है। कहा जा सकता है कि जिस प्रकार गन्तव्य जानने हेतु सड़क में दूरी नापने के लिए किलोमीटर या मील दर्शक पत्थर होते हैं उसी प्रकार आकाश में ग्रहों की स्थिति जानने के लिए नक्षत्र एवं राशियाँ हैं। इस तरह आकाशस्थ सुनिश्चित स्थान पर स्थिर नक्षत्रों को ग्रहण करने वाले ग्रह कहलाते हैं। अतः महर्षि पाराशर का कथन है-

तेजः पुंजानुवीक्ष्यन्ते गगने रजनीषु ये।
नक्षत्रसंज्ञकास्ते तु न क्षरन्तीति निश्चलाः।।
विपुलाकारवन्तोऽन्ये गतिमन्तो ग्रहाः किल।
स्वगत्या भानि गृह्णन्ति यतोऽतस्ते ग्रहाभिधाः।।[7]

नक्षत्रों के सापेक्ष ग्रहों की स्थिति बताने की यह पद्धति वैदिककाल से ही भारत में प्रसिद्ध है। पंचांगपत्रक में तिथ्यादिक्रम में जो नक्षत्र सूचित किए जाते हैं, वे नक्षत्रों के सापेक्ष चन्द्र की स्थिति प्रकट करते हैं। अर्थात् वे चन्द्रनक्षत्र हैं।

नक्षत्रों की संख्या, नाम एवं राशि विचार

आकाशनिरीक्षण करने पर असंख्य तारे दिखाई देते हैं। इनमें प्रायः मध्य आकाश में सूर्य का पूर्वाभिमुख भ्रमणवृत्त, जिसको क्रान्तिवृत्त के नाम से भी जानते हैं, होता है। इसके उत्तर व दक्षिण दोनों ओर 9-9 अंश के कल्पित पट्टे में ही सभी ग्रह स्थित हैं। इसे ही भचक्र या नक्षत्रचक्र अथवा राशिचक्र भी कहा जा सकता है। इसमें स्थित तारों के समूह को 27 समान भागों में बांट दिया गया है। प्रत्येक भाग के प्रमुख तारे के नाम पर उस समूह का नाम हमारे प्राचीन आचार्यों ने दिया है। इन तारासमूहों

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला–षोडश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के केयर लिस्ट में सम्मिलित)

प्रधान सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक
प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी
आचार्य एवं अध्यक्ष

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नइ दिल्ली–110016

प्रकाशक-

वास्तुशास्त्र विभाग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110016

ISSN :- 0976-4321

© प्रकाशक

संस्करण - 2023

मुद्रण वर्ष - 2024

मूल्य- ₹ 200/-

प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इस ग्रन्थ के किसी भी अंश का अनुवाद या किसी भी रूप में उपयोग करना सर्वथा वर्जित है। शोधलेखों में लेखकों के स्वयं के विचार हैं। शोधलेख में किसी भी प्रकार का विवाद होने पर शोधलेखक स्वयं उत्तरदायी होगा।

विषयानुक्रमणिका

1.	वास्तुशास्त्रीयग्रन्थानुसारं वृक्षविषयकसमीक्षणम्	**डॉ. छबिलालन्यौपानेः** सहायक-प्राचार्यः (दर्शनम्) नागार्जुन-उमेश-संस्कृतमहाविद्यालयः (का.सिं.द.सं.विश्वविद्यालयस्याङ्गीभूतः) तरौनीग्रामः, दरभङ्गाजनपदः बिहारराज्यम् – 847233	01
2.	द्वारविन्यासक्रमे दोषाः निवारणोपायाश्च – एकम् अध्ययनम्	**डॉ. गणेशकृष्णभट्टः** सहायकाचार्यः (अतिथिः) ज्योतिषविभागः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, गुरुवयूर परिसरः, त्रिशूरः, केरल	14
3.	ग्रामस्य मुख्यद्वारम्	**डॉ. अश्वनीकुमारः** सहायकाचार्यः (अतिथिः) राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः (आ.प्र.)	18
4.	लङ्कादेशस्य स्थानपरिकल्पनायां भेदः वर्तमानस्थितिश्च	**अंशुलकुमारदुबे** प्राध्यापकः ज्योतिषशास्त्रम् रा.वरि. उपा.सं.विद्यालय, बौंली (सवाईमाधोपुरम्), राजस्थानम्	22
5.	वासगृहे आन्तरिकप्रकोष्ठविन्याससम्बद्धाः वास्तुदोषाः, तेषां निवारणोपायाश्च	**गिरीशभट्टःबि**, शोधच्छात्रः, निदेशकः - प्रो. ए. श्रीपादभट्टः, आचार्यः, राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः, आ.प्र.	28
6.	भारतीयमन्दिराणां पर्यावरणेन सह सम्बन्धः	**मेघा शर्मा**, शोधच्छात्रा, **निदेशक- प्रो. बिहारी लाल शर्मा** ज्योतिष विभाग, श्री ला.ब.शा.रा.स.वि. वि., नई दिल्ली	35

7.	श्रीमद्रामायणदिशा नगरवास्तुविचारः	**ए. श्रीनिवास शर्मा,** शोधच्छात्रः, निर्देशकः- प्रो. ए.श्रीपादभट्टः, ज्यौतिष-वास्तुविभागः राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः	43
8.	वाल्मीकिरामायणानुसारं गृहकक्षाणां समीक्षा	**श्रीमतीज्योतिशर्मा,** शोधच्छात्रा, **निदेशक- प्रो. अशोकथपलियालः,** आचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः श्री ला.ब.शा.रा.स.वि. वि., नवदेहली	49
9.	आमेरदुर्गस्थ शिलादेवीमन्दिरस्य स्थापत्यकला	**प्रियाकौशिकः,** शोधच्छात्रा **निदेशक- डॉ. योगेन्द्र कुमार शर्मा,** सहायकाचार्यः वास्तुशास्त्रविभागः श्री ला.बा.शा.रा.सं.वि.वि., नई दिल्ली	54
10.	द्वार-मर्मस्थानयोः सम्बद्धाः वास्तुदोषाः, तेषां निवारणोपायाश्च	**अनिलकुमारदेसायिः,** शोधच्छात्रः, निर्देशकः- डॉ. कृष्णकुमारभार्गवः, ज्योतिष-वास्तुविभागः, राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः	67
11.	भारतीय वास्तुशास्त्र का दार्शनिक एवं वैज्ञानिक स्वरूप विमर्श	**प्रो. वासुदेव शर्मा** पूर्व निदेशक, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्री रणवीर परिसर, जम्मू	73
12.	वास्तु और पर्यावरण	**प्रो. अमित कुमार शुक्ल** ज्योतिष विभागाध्यक्ष, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	78
13.	अन्तरिक्ष नाड़ी का अंशानुक्रम विभाग	**विद्यावाचस्पति प्रो. सुन्दरनारायणझा** आचार्य वेदविभाग श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नवदेहली-16	86
14.	मन्दिर निर्माण के आधारभूत सिद्धान्त	**डॉ. सुभाष पाण्डेय** सहाचार्य, ज्योतिष विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी	106

वाल्मीकिरामायणानुसारं गृहकक्षाणां समीक्षा

श्रीमतीज्योतिशर्मा

लौकिकसाहित्ये वाल्मीकिरामायणं, महाभारतं, नाट्यशास्त्रं, शुक्रनीतिः, अष्टाध्यायी, अर्थशास्त्रं, बौद्धजातकम् इत्यादिप्राचीनग्रन्थाः सन्ति, येषां समयः निश्चितरूपेण न ज्ञायते तथा चेषां निश्चिततिथीनामभावे परवर्तिग्रन्थेषु प्राप्तान् नामोल्लेखान् सङ्केतान् च आधारीकृत्य तर्क-वितर्काः क्रियन्ते। एतद्ग्रन्थेषु वास्तुसम्बद्धा या सामग्री उपलब्धा अस्ति, तस्याः ऐतिहासिकं महत्त्वं वर्तते। एवंविधकतिपयग्रन्थेषु रामायणे प्राप्तवास्तुकलायाः वर्णनपुरस्सरं समीक्षणङ्क्रियते-

भारतीयपरम्परायां रामायणस्य कालः त्रेतायुगद्वापरयुगयोः सन्धिकालः मन्यते, परन्तु आधुनिकैः विद्वद्भिः तस्य मुख्यभागस्य रचनाकालः प्रायः ५०० ई.पू. इति स्वीकृतः। तदनुसारमस्य ग्रन्थस्य केचन अंशाः पश्चाद् योजिताः।[1] आदिकविना महर्षिवाल्मीकिना विरचितं रामायणं लौकिकसाहित्यस्य आदिकाव्यमिति नाम्नापि सम्बोध्यते। रामायणं २४००० पद्येषु निबद्धमेकं महाकाव्यमपि अस्ति।[2]

रामायणे प्रतिपादितप्रत्येकनिर्माणकार्यहेतोः दक्षवास्तुविदुषां कुशलशिल्पीनां प्राधान्यं प्रदत्तम् अस्ति। विविधमहत्त्वपूर्णनिर्माणकार्याणां सम्पादनात्परं शिल्पिनः वास्तुविदः नामोल्लेखसहितं सम्मानं दीयते स्म। रामायणकालीनजीवने मानवानां गृहविन्यासेऽपि वास्तुशास्त्रस्य प्रयोगः दृग्गोचरो भवति। रामायणे समावेशितायाः गृहवास्तुकलायाः ज्ञानात्प्राग् वास्तुपरिभाषाया अवगमनम् आवश्यकम्। वास्तुशब्दः **वस् निवासे** धातोः निष्पन्नः। अस्य व्युत्पत्त्यर्थः **वसन्ति प्राणिनो यत्र** अर्थात् यत्र मनुष्याः निवसन्ति इत्येवं कृतः।[3] नगर-गृह-भवनाद्यावासः यत्र मनुष्याः निवसन्ति, वास्तुनाम्ना ज्ञायन्ते।[4] वास्तोः वैदिकदेवता ऋग्वेदे वास्तोष्पति इति नाम्ना अभिहिता।[5]

ऋग्वेदे गृहवास्तुसम्बन्धे कथितं यद् यः मनुष्यः सर्वतः अत्यन्तं सावकाशं गृहं निर्माय वसति, सः निरोगी सन् स्वम् अन्यान् च जनान् सुखं प्रयच्छति। सुन्दरगृहार्थे सुवास्तुः[6] एवं गृहाभावार्थे कुवास्तुः[7] इति शब्दप्रयोगः प्राप्यते। तत्र रामायणकालीनगृहनिर्माणकला मुख्यरूपेण युग्मगृहं, सामूहिकगृहं, व्यावसायिकगृहं, प्रशासनिकगृहं चेति चतुर्षु भागेषु विभक्तुं शक्यते। रामायणकालस्य गृहाणि वास्तुविद्भिः अत्यन्तं सुशोभितानि कृतानि। समस्तगृहेषु

---

1. भारतीय वास्तुशास्त्र का इतिहास, पृ. 66
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ. 123
3. शब्दकल्पद्रुमः, भागः – 4, पृ.248
4. हिन्दीसंस्कृतकोश, पृ.923
5. ऋग्वेदः, 7.54.1
6. ऋग्वेदः – 8.19.37
7. अथर्ववेदः – 12.9.7

www.sanskritarticle.com

ISSN NO. 2454-9177

National Journal of Hindi & Sanskrit Research

Volume 49 (July-August, 2023)

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

National Journal of Hindi & Sanskrit Research

Online, Peer Reviewed Journal, Impact Factor (RJIF): 5.11, ISSN NO. : 2454-9177

Publication Certificate

This certificate confirms that " श्रीमतीज्योतिशर्मा, डॉ. अशोकथपलियाल: " has published article titled " वैदिककालीनभवनानां समीक्षा ".

Details of Published Article as follow:

Volume : 49
Issue : July – August
Year : 2023
Page No. : 103-105

Yours Sincerely,

Anil Aggarwal

Anil Aggarwal
Publisher
National Journal of Hindi & Sanskrit Research
Web: www.sanskritarticle.com

National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2023 1(49): 103-105
© 2023 NJHSR
www.sanskritarticle.com

श्रीमतीज्योतिशर्मा
शोधच्छात्रा, वास्तुशास्त्रविभागः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत-विश्वविद्यालयः,नवदेहली

शोध निर्देशक :
डॉ. अशोकथपलियालः,
आचार्यः, वास्तुशास्त्रविभागः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत-विश्वविद्यालयः, नवदेहली

CorreSpondence:
श्रीमतीज्योतिशर्मा
शोधच्छात्रा, वास्तुशास्त्रविभागः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत-विश्वविद्यालयः,नवदेहली

वैदिककालीनभवनानां समीक्षा

श्रीमतीज्योतिशर्मा, डॉ. अशोकथपलियालः

प्रायः वास्तुशैल्याः विकासस्य विचारं कुर्वन्तः जनाः वर्तमानरूपस्य आधारेण तस्या उत्पत्तिं कल्पयन्ति। एतत् कुर्वन्तः ते तस्य विकासस्य मध्यपदं त्यक्त्वा सर्वथा आदिमपदं कल्पयितुं आरभन्ते, यस्मात् कारणात् तेषां निष्कर्षो भ्रामको भवति, संशयस्य स्थानं च भवति। समुचितंत्विदं यत् साम्प्रतिकवास्तुकलायाः ह्यस्तनवास्तुकलया सह सन्तुलनं विचार्य तत्पूर्वदिनैः साकं सम्बद्धं कृत्वा अन्ते तस्याः प्रप्रथमस्वरूपस्य विचारो भवेदिति। तस्मिन् एव क्रमे कस्यापि प्राचीनस्य वास्तुनः अद्यतनवास्तुना सह सम्बन्धं स्थापयितुं वयं समर्था भवामः। यथोक्तमस्ति -

"आदौ मनुष्येण गुहा- कुटीराणि च स्वस्य रक्षणसाधनरूपेण कृतानि आसन्। एतेषु गुहाः प्राकृतिकाः, कुटीराणि च मानवकृतानि सन्ति। एतयोः रूपयो वास्तुः विकसितः इति स्पष्टम्। कुटीरनिर्माणस्य प्रारम्भिकानि साधनानि के आसन् इति न ज्ञायन्ते। यथोपलब्धसामग्यनुसारेण प्राचीनजनाः कुटीरादिकं निर्मितवन्तः। ततः मानवबुद्धेः विकासेन सह यदा तेऽधिकस्थायिसामग्रिभिः निवासस्थानानि कृतवन्तः, तदा तैः स्वस्य पुरातनवास्तूनां रूपाणि सर्वथा न त्यजितानि। तेषां प्राचीनवास्तूनां सङ्कल्पनानुसारेणैव नूतनवास्तूनां रचनाऽभवत्। अस्मिन्नैव क्रमे वास्तुयोजनायाः निर्माणस्य स्वरूपस्य च विकासो जातः।"[1]

अतः भारतीयवास्तुशास्त्रस्य मूलसंकल्पनाज्ञानार्थं वैदिकवास्तुनः विषये ज्ञानमावश्यकम्। अत्र वैदिकवास्तुविषये विमर्शः प्रस्तूयते -

वेद संहितासु ऋग्वेदः प्रथमो भवति। ऋग्वेदे निवासार्थं गृहशब्दस्य प्रयोगः कृतः अस्ति।[2]

अस्मिन् वेदे गृहस्य अनेके पर्यायवाचीशब्दाः प्रयुक्ताः यथा-

'गृहं, गयः, धामन्, दमः, दुरोणः, दुर्यः, स्थानम्, सदस्, सद्म, सदनम्, नृषदनः, मानः, विमानः, द्रयः, अयनः, शर्मः, आयतनः, क्षयः, श्रयः, हर्म्य :, ओट्सः, वास्तुः, वसतिः, प्रसद्मनः, निवेशनः, वेश्मः, वेशः, साला, शाला, नीडः, पस्त्या, अस्त इत्यादय :।'[3]

एतेषां सर्वेषां प्रयोगः परवर्ति परम्परायां आवासीयभवनानां कृते प्रचलितो जातः, यस्यार्थः अपि प्राचीनसन्दर्भेषु स्पष्टो भवति। कदाचित् **'सदस्'** शब्दः उपवेशनस्थानस्य सूचकः, यस्य कृते सभा, समितिः, विदथ इत्यादयः शब्दाः अपि ऋग्वेदे प्रयुक्ताः सन्ति। तत्र गृह निर्माणसम्बद्धानां बहूनां सिद्धान्तानां च संकेता अपि प्राप्यन्ते। अपि चात्र गृहस्य भवनस्य वा निर्माणसम्बन्धीनामथवा तस्य वास्तुभागानां कृते प्रयुक्ताः अन्ये बहवः सामान्यशब्दाः अपि अतीवमहत्वपूर्णाः सन्ति। **यथा-**

"स्तम्भः, स्कम्भः, कम्भः, स्थूणा, अयः, स्थूणः, धरुणः, धातु, साल[4], छदिस्, वरूथः, द्वार, द्वाः, दुरः।[5] अस्मिन् वेदे एव बृहद्गृहस्य कृते 'बृहत् क्षयः' दीर्घसद्मनः इत्यादयः शब्दाः प्रयुक्ताः सन्ति।"[6]

अत्र गृहस्थापत्यस्य विशेष: महत्त्वपूर्णश्च भाग: स्तम्भ: , स्थूणा, थूनी वा आसीत्। एतया दृष्ट्यैव इन्द्राय गृहस्य विश्ववास्तुनो वा सर्वोत्तमस्तम्भस्य स्वाम्युक्त:।[7] अस्य वेदस्य एकस्मिन् मन्त्रे दृढे आधारे स्थापितानां त्रयाणां स्तम्भानां उल्लेख: प्राप्यते, तेषु त्रिकोणीय अथवा मृदङ्गाकार छर्दि: आसीत्।[8] गृहस्य छर्दिस: आश्रयार्थं स्तम्भानां स्थापना 'अनिवार्या' आसीत्।[9] स्तम्भस्य अधिष्ठानस्य आधारस्य धरुणं नाम आसीत्।[10] ऋग्वेदे केवलं निर्मितगृहाणां कृते **'सदनानि कृत्रिमा'** शब्द: प्रयुक्तो दृश्यते।[11] तत्र गृहाणां निर्माणं मृत्तिकात: कथितमस्ति। यथा- **"सद्मपार्थिवम्"**[12], **"मृण्मयं गृहं"**[13] यत्तु स्पष्टया तेषां भित्तिभि: सम्बन्धितमस्ति। अनेकस्थानेषु सहस्रस्तम्भेषु स्थितस्य भवनस्य सभाया: वा वर्णनमपि प्राप्यते। तद् गृहं ध्रुवोत्तमं परिकीर्तितमस्ति।[14] एवं प्रकारेण सहस्रद्वारविषयेऽपि तत्र चर्चा प्राप्यते । यथा –

"बृहन्तं मानं वरुण स्वधाव: सहस्रद्वारं जगमा गृहं ते ।"[15]

गृहस्य अन्त: स्थाने प्राङ्गणस्य अथवा अजिरस्य उल्लेखोऽस्ति।[16] वास्तुशब्द ऋग्वेदे पारिभाषिकरूपे भवनस्य तदूतस्थानस्य कृते वा प्रयुक्तो दृश्यते । यथा –

"ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै ।"[17]

अस्मिन् सन्दर्भे गृहस्य अधिष्ठातृदेवाय वास्तोष्पति संज्ञा प्रचलितासीत् ।

वैदिकसाहित्यस्यानुसारं वैदिकयुगे भवननिर्माणस्य आधार: न केवलं काष्ठादय, अपितु मृत्तिका- इष्टिका- पाषाणादयाप्यासन्।[18] ऋग्वेदे एकस्मिन् प्रसङ्गे वरुणेन प्रार्थना कृताऽस्ति यदहं मृत्तिकागृहे न निवसेम इति।[19] अनेन स्पष्टं यत् तस्मिन् युगे मृत्तिकागृहाणि आसन्। उपर्युक्तस्थले निर्मितानां गृहाणां प्राप्तिकामना कृतास्ति।

'त्रिधातु:' मनुष्याणाम् आश्रय: इति ऋग्वेदे वर्णित:।[20] ग्रिफिथस्य मते त्रिधातुशब्दस्याभिप्राय: इष्टिका- शिला- काष्ठै: निर्मितै: भवनैरस्ति।[21] आचार्यसायणेन **"सुवर्णरजतताम्र"** युक्तं गृहं त्रिधातु इति वर्णितम्।[22]

ऋग्वेदानन्तरं गृहसम्बन्धिवर्णनानि अथर्ववेदे अपि प्राप्यन्ते तत्रापि गृहशब्दस्य प्रयोग: दृश्यते यथा- 'वरुणगृह:'[23] "गृहे वसतु"[24] इति।

अथर्ववेदे शालानिर्माणसूक्तमस्ति यत्तु शालाया: गृहनिर्माणस्य वा विवरणदृष्ट्याऽतीव महत्त्वपूर्णमस्ति। तत्र गृहनिर्माणनिर्देशं दत्त्वा उक्तं यत्–

"उपमितां प्रतिमितामयो परिमितामुत।
शालाया विश्वाराया नद्धानि वि चृतामसि।।"[25]

अथर्ववेदे गृहविषयकोपर्युक्तवर्णनेन स्पष्टं भवति यत् तस्मिन् काले नियतपरिमाणानुसारं गृहाणि निर्मीयन्ते स्म । अन्यत्र उक्तं यत् –

"हे शाले ! त्वम् अश्ववतीं गोमतीं श्रेष्ठवाणीयुक्तां भूत्वा अत्र दृढा भवतु । ऊर्जितेन अन्नयुक्तेन उत वा पयोयुक्तेन महत् सौभाग्यं दातुं, उन्नतस्थाने स्थिरा भव।[26] वैदिक-आर्याणाम् आजीविका मुख्यतया कृषिपशुपालनानि आसन् । अत: प्राचुर्येण तत्र गवादय: पशव: आसन्।" तेषां गृहाणि अश्वगोभि: पूर्णानि आसन् यत्र , घृतधारा: च प्रवहन्ति स्म । तादृशेषु धान्यादिपूर्णेषु गृहेषु ते आनन्देन निवसन्ति स्म ।

वैदिकयुगस्य गृहेषु बहव: कोष्ठका आसन्, यानि भिन्नप्रयोजनाय प्रयुक्ता भवन्ति स्म। अथर्ववेदस्य एकस्मिन् मन्त्रे चतुर्विधा कोष्ठा उल्लिखिता : सन्ति –

"हविर्धानमग्निशाल पत्नीनां सदनं सद:।
सदो देवानामसिदेवि शाले।।"[27]

अत्र उक्तं यद् यथा वैद्य: भग्नभागान् संयोज्य दृढं करोति तथा एव गृहसामग्रीणां सङ्ग्रहं कृत्वा गृहाणि दृढानि दीर्घायुष: युक्तानि च भवन्ति इति उक्तम्।[28] अथर्ववेद एव गृहोपमा अलङ्कृतेन गजेन दत्ता।[29] सम्भवत: तदा गृहाणां बाह्याभ्यन्तरभित्ति: विशेष प्रकारकै: चित्रै: रञ्जिता भवति स्म अत: एकस्मिन् स्थाने गृहस्य तुलना सुन्दरवध्वा भवति।[30] अस्मिन् सरलकुटीरत: विशालभवनपर्यन्तं प्रत्येकं प्रकारस्य गृहस्य उल्लेख: कृतोऽस्ति। अत्र द्विपक्ष:, चतुष्पक्ष:, षट्पक्ष: इत्यादय: शाला अपि वर्णिता: सन्ति।[31] पाषाणनिर्मितभवनान्यपि तदा भवन्ति स्म।[32] अथर्ववेदस्य मन्त्रेभ्य ज्ञायते यद् गृहस्य शालाया: वा आधार: अतीव सुदृढ: स्थापितो भवति स्म, येषां निर्माणे प्रस्तरादीनां प्रयोगस्य संकेता: समुपलभ्यन्ते।[33]

अनेन प्रकारेण वैदिककाले गृहादिकानां व्यवस्था वास्तुशास्त्रा-नुरूपमासीदियनुमीयते। वैदिकगृहाणां मूलसंकल्पनां स्वीकृत्यैव पश्चाद्वर्तिकाले गृहादिकानां रचना जाता । अत: कथयितुं शक्यते यद् वैदिकगृहनिर्माणस्यावधारणा एव वास्तुकलाया: मूले अवतिष्ठ-त्येवेति।

पाद टिप्पणी -

[1] भारतीय वास्तुकला,पृष्ठ-३

[2] सुरणं गृहे ते- ऋग्वेद, ३.५.३.६ , दाशुषो गृहे- ४.४९.६, ८.१०.१

[3] प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु, अ.-२ , पृ.-४७

[4] प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु, अ.-२ , पृ.-४७

[5] मनो अस्या अन आसीद्योरासीदुतच्छदि:। शुक्रावनड्वाहावास्तां यदयात्सूर्या गृहम् । । - ऋग्वेद , १०.८५.१०

[6] बृहन्तं क्षयं असमं जनानां – ऋग्वेद १०.४७.८

[7] चास्कम्भ चित् कम्भेन स्कभीयान् – ऋग्वेद, १०.१११.५९

[8] त्रय: स्कम्भास: स्कभितास: - ऋग्वेद , १.३४.२

[9] प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु , अ.-०२ (ऋ.-२.१५.२ उद्धृत)

[10] स्कम्भं धरुण , ऋ.-१०.४४.४

[11] स हि श्रवस्यु: सदनानि कृत्रिमा क्षमया वृधान ओजसा विनाशयन्।
-ऋ. – १.५५.६

[12] (क).अध स्वनान्मरुतां विश्वमा सद्म पार्थिवम् ।
अरेजन्त प्र मानुषा: । । - ऋ.- १.३८.१०
(ख). ते रुद्रास: सुमखा अग्नयो यथा तु विद्युम्ना अवन्त्वेवयामरुत्।
दीर्घं पृथु पप्रथे सद्म पार्थिवं येषामज्मेष्वा मह: शर्धास्य-
द्भुतैनसाम् ।। - ऋ.- ५.८७.७

[13] मो षु वरुण मृन्मयं गृहं राजन्नहं गमम् । -ऋ. – ७.८९.१

[14] (क) राजानावनभिद्रुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे । सहस्रस्थूण आसाते।।
- ऋग्वेद , २.४१.५
(ख) समिधान सहस्रजिदग्ने धर्माणि पुष्यसि । देवानां दूत उक्थ्य :
। । , ऋग्वेद – ५.२६.६

[15] ऋग्वेद – ७.८८.५

[16] त्वामीकते अजिरं दूत्याय हविष्मन्त: सदमिन्मानुषास:।
- ऋ.- ७.११.२

[17] ऋग्वेद – १.१५४.६

[18] प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु , पृ.- ४९

[19] (क) अथ स्वनान्मरुतां विश्वमा सम पार्थिवम् । ऋ.- १.३८.१०
(ख)दीर्घ पृथु पप्रथे सम पार्थिवं सेवामज्मेष्वा मह:
शर्धास्यद्धतैनसाम्। - ऋ.- ५.८७.७

[20] इन्द्र त्रिधातुशरणं त्रिवरूथं स्वस्तिमत्।
छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च महह्यं च यावया दिधुमेभ्य:।।
- ऋ. -६.४६.९

[21] भारतीयवास्तुशास्त्रस्य इतिहास:, अ.- १, पृ.- ४१

[22] तथैव

[23] अप्सु ते राजन्वरुण गृहो हिरण्ययो मिथ ।
ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु।। - अथर्ववेद-७.८३.१

[24] हिरण्यस्रगयं मणि: श्रद्धां यज्ञं महो दधत् ।
गृहे वसतु नोऽतिथि: । । - अथर्ववेद-१०.६.४

[25] अथर्ववेद-९.३.१

[26] इहैव ध्रुवा प्रति तिष्ठ शाले चावती गोमती सूनृतावती।
ऊर्जस्वती घृतवती पयस्वत्युच्छ्रयस्व महते सौभगाय।।
ऋ.- ३.१२.२

[27] अथर्ववेद- ९.३.७

[28] आ ययाम से बंबई ग्रन्थींश्चकार ते दृढान् ।- अथर्ववेद

[29] मिता पृथिव्यां तिष्ठसि हस्तिनीव पद्धती। अथर्ववेद–९.३.१७

[30] वधूमिन त्वा शाले यत्रकामं भरामसि । अथर्ववेद- १.३. २५

[31] या द्विपक्षा चतुष्पक्षा षट्पक्षा या निमीयते ।
अष्टपक्षां दशपक्षां शालां मानस्य पत्नी मग्निगर्भ इवा शये।
अथर्ववेद-९.३.२९

[32] अश्मवर्म मेडसि.....। अथर्ववेद-५.१०.१-७

[33] इहैव ध्रुवां नि मिनोमि शालां क्षेमे तिष्ठाति घृतमुक्षमाणा।
त्वां त्वा शाले सर्ववीरा: सुवीरा अरिष्टवीरा उप संचरेम।
इहैव ध्रुव्रा प्रति तिष्ठ शालेड श्वावती गोमती सूनृतावती।
ऊर्जस्वती घृतवती पयस्वत्युच्छ्रयस्व महते सौभगाय ।।
- अथर्ववेद- - ३.१२.१-२